thearyasamaj.org

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास–माघ–फाल्गुन संवत् 2071
फरवरी 2015

ओ३म्

अंक 115, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

महर्षि दयानन्द सरस्वती
जन्म दिवस

गुरुकुल आश्रम सलखिया में सम्पन्न वार्षिकोत्सव में उमड़ा जनसैलाब

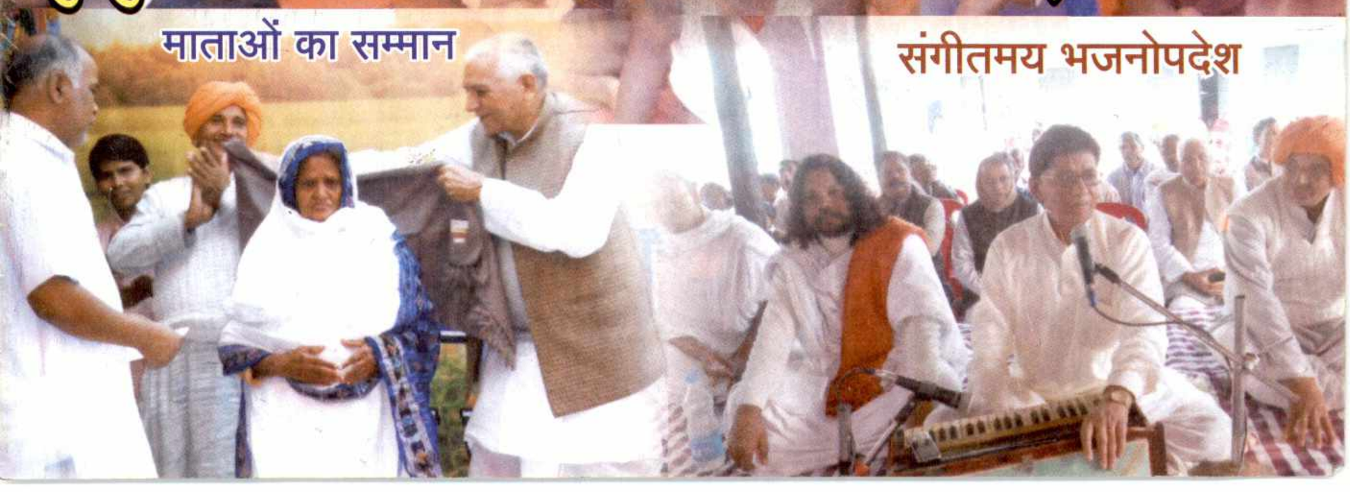

माताओं का सम्मान

संगीतमय भजनोपदेश

thearyasamaj.org

वैदिक गुरुकुल आश्रम सलखिया (रायगढ़) में सम्पन्न आर्यवीर दल एवं चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर एवं वार्षिकोत्सव की झलकियाँ

thearyasamaj.org

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७१
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११५
दयानन्दाब्द - १९१

वर्ष - १०, अंक ८ ओ३म् मास/सन् - फरवरी - २०१५

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्जसज्जकम्,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००१
फोन : (०७८८) २३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : हे प्रभु ! हम तुम्हें समर्पित हैं	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : शिवरात्रि पर जगा दयानन्द– फिर नहीं सोया .	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	वैदिक धर्म मानवता का संविधान	डॉ. बिजेन्द्र पाल	०८
४.	सांसारिक जीवन के सुख व मोक्ष का प्रमुख आधार हमारा स्वास्थ्य	श्री मनमोहन कुमार आर्य	१०
५.	सिद्धान्तविहीन होती ऋषि मुनियों की सन्तानें	डॉ. हर्षवर्धन शर्मा	१३
६.	सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्	डॉ. रामप्रकाश शर्मा	१५
७.	नारी सम्मान	प्रो. सुभाष चन्द	१७
८.	यज्ञोपवीत के तीन धागों का महत्व	श्री खुशहालचन्द्र आर्य	१९
९.	दयानन्द का सपना कौन पूरा करेगा	डॉ. वेदप्रताप वैदिक	२१
१०.	सभी प्रकार के दुःखों का निवारण का उपाय – 'योग दर्शन'	श्री कृपाल सिंह वर्मा	२४
११.	छ.ग. में वेद की दुन्दुभी बजाने वाले "स्वामी दिव्यानन्द"	आचार्य तरुण शास्त्री	२६
१२.	होम्योपैथिक से मधुमेह रोग का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२७
१२.	समाचार दर्पण		२९

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

thearyasamaj.org

वेदामृत

हे प्रभु ! हम तुम्हें समर्पित हैं

वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन्नभूम, वयं दात्रे हरिवो मा वि वेनः।
नकिरापिर्ददृशे मर्त्यत्रा, किमङ्ग रध्रचोदनं त्वाहुः ॥ ऋग्. ६.४४.१०

ऋषिः **शंयुः बार्हस्पत्यः**। देवता **इन्द्रः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(मघवन्)** हे प्रशस्त धनवाले **(इन्द्र)** परमेश्वर ! (वयं) **हम (तुभ्यं)** तुम **(दात्रे)** दानी के लिए **(इत्)** ही **(अभूम)** (समर्पित हो गये हैं। **(हरिवः)** हे किरणों वाले ! हे ऋक्-साम-रुप हरियोंवाले ! **(मा वि वेनः)** (हमसे) प्रीतिविमुख मत होओ। **(मर्त्यत्रा)** मनुष्यों में **(आपिः)** बन्धु **(नकिः)** कोई नहीं **(ददृशे)** दीख रहा है। **(अङ्ग)** हे प्रिय ! **(किं)** क्यों **(त्वा)** तुझे **(रध्रचोदनं)** सफलता का प्रेरक **(आहुः)** कहते हैं।

● **हे** इन्द्र ! हे परमात्मन् ! तुम 'मघवा' हो, धन के अधिपति हो। इसके अतिरिक्त तुम धन के 'दाता' भी हो। साथ ही तुम्हारा धन प्रशस्त है, शुभ्र है, उज्वल है, हम सांसारिक जनों के धन के समान तरह-तरह की अपवित्रताओं को अपने अन्दर समेटे हुए नहीं है। मनुष्य का क्योंकि पूर्णतः पवित्र होना कठिन है, अतः उसके द्वारा अर्जित धन भी पूर्णतः पवित्र नहीं होता। विरला ही कोई मनुष्य यह कहने का साहस कर सकता है कि उसने धनोपार्जन करते हुए किसी भी प्रकार के असत्य, छल-छिद्र आदि का आश्रय नहीं लिया है। पर तुम्हारे धन के विषय में हम पूरे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि वह पूर्णतः पवित्र है। किन्तु 'मघ' नाम से सूचित होने वाला धन केवल भौतिक धन ही नहीं होता, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक, नैतिक आदि धनों को भी 'मघ' कहते हैं। हे परमेश्वर ! तुम समस्त प्रकार के पवित्र धन को हमें दान करते हो। पर उसके लिए आवश्यक है कि हम तुम्हारे हो जाएं, अपने-आपको तुम्हें समर्पित कर दें। अतः आज से हम अपने-आपको तुम्हें सौंपते हैं। तुम 'हरिवान्' हो, किरणोंवाले हो। अपनी दिव्य ज्योति की किरणें हमारे ऊपर फेंककर हमें भासमान कर दो, जैसे सूर्य अपनी किरणों को मंगल आदि ग्रहों पर प्रक्षिप्त कर उन्हें भासमान करता है। तुम ऋक् और साम-रूप हरियोंवाले भी हो। ऋचाओं के स्तोत्र और साम के गीत मानों तुम्हारें वाहन हैं। उनसे तुम विश्व की यात्रा कर लेते हो, विश्व में प्रसार पा लेते हो। हे परमेश ! तुम हमें अपना लो, हमसे प्रीति-विमुख मत होओ।

हे प्रिय ! हम तुम्हारे अतिरिक्त और किसके द्वार पर जाएं ? मनुष्यों में हमें कोई भी 'बन्धु' नहीं दिखाई देता, ऐसा उदार-दृश्य दृष्टिगोचर नहीं होता जो हमारा 'आपि' बन जाए, संकट के समय हमारे पास दौड़ा चला आये, हमें अपने में व्याप ले, हमारा अभिन्न-हृदय बन जाये। संसार में सब स्वार्थ के साक्षी प्रतीत होते हैं। इसलिये हे प्रभु ! हम तो तुम्हें ही अपना बन्धु बनाते हैं। तुम हमें ही अपना बन्धु बना लो। तुम हमें अपनी शरण में ले लो। तुम संकुचा क्यों रहे हो ? क्या व्यर्थ ही जग तुम्हें 'रध्रचोदन' कहता है, सफलताएं दिलाने वाले के रुप में तुम्हारा महिमा-गान करता है ? नहीं, तुम सचमुच सफलता के दाता हो। तुम हमें अपने बन्धुत्व में बाँध लो, अपने स्नेह का पात्र बना लो।

संस्कृतार्थ :- १. हरयः किरणाः (निरु. ७.२४)। ऋक्सामे वा इन्द्रस्य हरी (षड्. ब्रा. १.१) २. वेन कामनार्थक (निघं २.६), ३.मर्त्यत्रा सर्त्येषु। सप्तमी अर्थ में त्रा प्रत्यय। ४. रध हिंसासंराद्ध्योः। चुद प्रेरणे।

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

शिवरात्रि पर जगा दयानन्द -फिर नहीं सोया

पूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपने वक्तव्य में कहा था - सपना वह नहीं जो इंसान सोकर देखता है, बल्कि सच्चा सपना वह होता है जो इंसान को सोने न दे। दयानन्द ने सन् १८३८ में १४ वर्ष की आयु में गुजरात के टंकारा स्थित शिवमंदिर में जागरण करते हुए जो सच्चा शिव देखा, उसके बाद पूरी जिन्दगी नींद उनकी आंखों से गायब हो गई। फिर चाहकर भी दयानन्द ने भी उसके आगोश में नहीं गए, इतिहास इस बात का परं प्रमाण है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती आरंभ से ही एक चेतना सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी थे। मूर्ति पर चूहे को बढ़ा देख जो कौतूहल जागा था, वह उनकी जागृत चेतना का ही प्रतिबिम्ब था। वह ब्रह्मचारी बड़ा पारदर्शी-दृष्टि-सम्पन्न और गुण-ग्राहक था, जिसने मूल जी को ब्रह्मचर्याश्रम में दीक्षित कर उन्हें शुद्ध चैतन्य की संज्ञा प्रदान की। विकसित चेतना वाले 'शुद्ध चैतन्य' ने अल्पायु में ही दण्डी स्वामी विरजानन्द से उनकी सम्पूर्ण विद्या ग्रहण की और अष्टाध्यायी, महाभाष्य, वेदान्त-सूत्रादि ग्रन्थों का अध्ययन पूरा करके देश-भ्रमण की उत्कट कामना से गुरु-आश्रम का परित्याग कर दिया। गुरु दक्षिणा के उत्सव में भावी चेतना का जो भाव उस स्वामी दयानन्द के आत्मप्रदेश से फूटा, उसका कारण था विद्या समय पर गुरु-मुख से निकला आशीर्वाद। स्वामी विरजानन्द ने कहा था -

"दयानन्द ! मुझे लौंग नहीं चाहिए। मुझे जो गुरु-दक्षिणा चाहिए, वह तुम्हीं दे सकते हो। मैं चाहता हूँ कि तुम देश के अज्ञान को दूर करो, कुरीतियों का निवारण करो, जिन ग्रन्थों में परमात्मा एवं ऋषि मुनियों की निन्दा है, उनका त्याग कर आर्ष ग्रन्थों का प्रचार करो। वैदिक ग्रन्थों के पठन-पाठन में लोगों को लगाओ, गंगा-यमुना के प्रवाह की भांति लोकहित की कामना से क्रियाशील जीवन व्यतीत करो। यही मेरी गुरु-दक्षिणा है।"

गुरु जी का यह आशीर्वाद ही स्वामी दयानन्द की राष्ट्रीय चेतना को जगा दिया और फिर जो राष्ट्रीयता की भावना उन्होने देशवासियों के भीतर भरी वह राष्ट्रीय स्वतंत्रता के निमित्त किये गये संग्रामों की निर्देशिका बनी। इतिहास में रुचि रखने वाले भली भांति जानते हैं कि गवर्नर-जनरल लार्ड लिटन ने महारानी विक्टोरिया को "भारत-राजेश्वरी" घोषित करने के लिए प्रथम जनवरी १८७७ में दिल्ली दरबार का आयोजन किया था। इस अवसर पर देश के सभी नरेश और अन्य गणमान्य व्यक्ति दिल्ली पधारे थे। दूरदर्शी स्वामी दयानन्द भी उस समय दिल्ली पहुंचे। वे उस दरबार में शामिल होने

thearyasamaj.org

नहीं आये थे, देश-प्रेम की भावना उन्हें वहां खींच लाई थी। कहना न होगा कि जिस बात को देश के स्वाधीनता-संग्राम के कर्णधारों ने बहुत बाद में जाकर अनुभव किया, स्वामी दयानन्द ने उसे उसी समय अनुभव कर लिया था। सम्पूर्ण राष्ट्र में एकता की स्थापना का उपयुक्त मार्ग खोज निकालने के लिए ही वे दिल्ली गये थे। देश की एकता ही उन्नति की साधक है, देश को पराधीनता के चंगुल से छुटकारा मिलना ही चाहिए और यह कार्य राष्ट्रीय एकता से ही सम्पन्न होगा, यह बात स्वामी जी ने भली-भांति अनुभव कर ली थी।

स्वामी जी ने सम्पूर्ण देश की उन्नति और राष्ट्रीय एकता पर विचार करने के लिए एक सभा का आयोजन किया। इस सभा में केशवचंद्र सेन, हरिदेशमुख, सरसैयद अहमद खां, हरिश्चन्द्र चिन्तामणि आदि भी पधारे थे। इस सभा में ही स्वामी जी ने राष्ट्रीय चेतना का शंखनाद करने वाली 'आर्य समाज' की स्थापना का विचार प्रस्तुत किया था। यहीं से स्वामी जी ने सम्पूर्ण देश की यात्रा का विचार बनाया। वे समूचे भारत में भ्रमण के लिए निकले और देश के प्रत्येक बड़े नगर में उन्होंने 'आर्य समाज' की स्थापना की। देश के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देकर देश को स्वाधीनता दिलाने वाली संस्था कांग्रेस में बहुसंख्यक लोग आर्य-समाजी विचारधारा के ही थे। यब बात कांग्रेस के इतिहास लेखक स्वयं डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने मुक्त कंठ से स्वीकारी है। सच तो यह है कि कांग्रेस और आर्यसमाज एक प्रकार से पर्यायवाची जैसे हो गये। अधिकांश विद्वानों की यह दृढ़ धारणा है, 'आर्य-समाज' ने स्वामी दयानन्द के आशीर्वाद को लेकर देश भर में एक जबर्दस्त क्रांति की, जिससे देशभर में जागरण हुआ, देशभक्त बने, देश पर मर मिटने की भावना जगी। हरिजन नेता भी प्रायः आज जो कांग्रेस अथवा अन्य दलों में दिखाई देते हैं, उन पर स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज की कृपा रही है। अछूतोद्धार, नारी जागरण, साक्षरता-आन्दोलन आदि की चेतना स्वामी जी ने ही जगाई थी।

देश जगाने का जो संकल्प स्वामी जी ने लिया था, वे उनसे एक पग भी पीछे नहीं हटे। जिन दिनों देश में 'स्वराज्य' का कोई नाम ही जानता था, उन दिनों स्वामी जी ने देश को 'सत्यार्थ-प्रकाश' और 'अपने देश में अपना राज्य' का नारा दिया। स्वामी जी ने कहा था कि विदेशी शासन चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, अपने शासन से अच्छा नहीं हो सकता। स्वामी जी के ये विचार उनकी देशभक्ति और राष्ट्रभावना के प्रतीक है। स्वामी जी के ये विचार और लोकमान्य तिलक का यह नारा-स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है - समान ही है।

जिस समय करोड़ों की संख्या में लोग हिन्दू-जाति से कटकर अलग हो रहे हैं, उस समय स्वामी दयानन्द ने उन्हें हिन्दू बने रहने के साधन जुटाने में हाथ बटाया। आर्यसमाज की हरिजनोद्धार की सेवा भुलाई नहीं जा सकती। राजनैतिक विचारों का आकलन और सर्वेक्षण करने वालों का यह

thearyasamaj.org

कथन सर्वथा सत्य है - "स्वामी दयानन्द के बाद उन जातियों के लिए जो सुधार या अधिकार मिले थे, वे राजनैतिक रहे। किन्तु स्वामी जी वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने पिछली शताब्दी में अपने प्रयत्न से अस्पृश्यता निवारण करके हरिजनों को गति लगाया।" राष्ट्रीय जागरण के लिए जरुरी था कि देश में फैली कुरीतियों का अंत किया जाये। आर्यसमाज ने स्वामी जी के निर्देशानुसार यह कार्य भी किया। कुरीतियों को दूर करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता थी। शिक्षा के प्रचार और प्रसार की ओर भी स्वामी जी ने ध्यान दिया। देश में आज जितनी शिक्षा दिखाई दे रही है, उसमें लगभग आधी शिक्षा का बीजारोपण करने वाले स्वामी दयानन्द थे। उन्होंने अंग्रेजों से लोहा लेकर विदेशी शिक्षा प्रणाली के मुकाबले भारत की प्राचीनतम शिक्षा प्रणाली को पुनरुज्जीवित करने के लिए गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति की स्थापना की। स्वामी दयानन्द के अनन्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने सर्वप्रथम लार्ड मैकाले का जवाब १९०२ में हरिद्वार की धरती पर गुरुकुल की स्थापना करके दिया। १८९० में जालंधर पंजाब में स्वामी जी ने सर्वप्रथम कन्या विद्यालय खोलकर नारी शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया था। मध्यकाल में नारी शिक्षा प्रतिबंधित थी, दयानन्द के प्रयासों से ही इसके दरवाजे खुले।

देश की मातृ-चेतना प्रसुप्त थी। स्त्रियों को पढ़ने-पढ़ाने की सुविधा न थी। उन्हें भी ढोंगियों ने शुद्र का दर्जा दे रखा था। हर ओर से स्त्रियों की प्रगति के द्वार बन्द थे। सब से पहले इस क्षेत्र में लोहा लेने वाले भी स्वामी दयानन्द ही थे। सर्वप्रथम आपने ही स्त्री-शिक्षा के द्वार खुलवाये। स्वामी जी की कृपा से ही भारतीय नारी को वेद-पाठ का अधिकार मिला। वे भी पुरुषों की भांति यज्ञोपवीत धारण कर सच्चे अर्थों में आर्या बनी। स्वदेशी की भावना भी पहले स्वामी जी ने ही जगाई। उन्होंने देशवासियों को विदेशी वस्तुओं का परित्याग करके स्वदेशी वस्तुएँ अपनाने का परामर्श दिया। स्वदेशी के प्रसंग में ही यह बात स्मरण रखने योग्य है कि स्वामी जी ने भारतीय विचारों के वाहन के लिए भारतीय भाषाओं को प्रमुखता दी। आपने समस्त भाषाओं की मूल संस्कृतभाषा के उन्नयन का कार्य किया।

देश की एकता के लिए गुजराती होते हुए भी आपने राष्ट्र भाषा हिन्दी को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। इस दृष्टि से स्वामी दयानन्द के बारे में यह कहा जा सकता है कि वह सच्चे अर्थों में एक महान जागृत आत्मा थे, जिनके रग रग में राष्ट्रवाद, आध्यात्मवाद कूट कूट कर भरा था। इसलिए शिवरात्रि के इस जागरण पर्व पर हम एक नया संकल्प लें कि हम दयानन्द के अनुयायी है, दयानन्द के सपनों को साकार करने अपनी पूरी क्षमता एवं योग्यता को लगा देंगे, वही सच्चे अर्थों में हमारे लिए बोधरात्रि सिद्ध होगी।

- आचार्य कर्मवीर

thearyasamaj.org

वैदिक धर्म मानवता का संविधान

उपादेयात्मक

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

वैदिक धर्म मानवता का धर्म है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में अपना विचार दिया है कि सब मत वाले अपने मत में से जो सर्वमान्य है उनको माने और जो विरोधी बाते हैं उन्हें निकाल दें। ऋषि दयानन्द की वैदिक धर्म के प्रचार के विषय में यही विशेषता रही कि उन्होंने कहीं कोई पक्षपात नहीं किया जो सर्वमान्य सत्य है वही प्रकाश किया। विश्व के सभी लोग प्रत्येक मत की पुस्तकों, ग्रन्थों को उठाकर देख लें, मनन कर लें, निष्पक्ष रुप से परीक्षा कर लें, यदि पक्षपातरहित होकर अध्ययन करेंगे तो वेद ही सर्वोपरि आएगा, क्योंकि वेद सबसे अलग है, जिसमें अपनी विशेषताएँ हैं। कुरान, बाईबिल, तौरेत, जम्बूर, इन्जील, हदीस इनमें जो विषय है वह भूगोल, स्थान, वर्ग विशेष हेतु है, इनमें ऐतिहासिक विषय है और मनुष्य द्वारा रचित है।

वेद ईश्वरीय है, ईश्वरीय इसलिए क्योंकि जैसे ईश्वर सभी पर दया करता है पक्षपात नहीं करता, सबका कल्याण करने वाला है सत्य स्वरुप है, निष्पक्ष रुप से सभी को सबकुछ देता है, वैसा ही वेद ज्ञान है। सत्य व न्याय युक्त ज्ञान सबके लिए है, कहीं कोई पक्षपात नहीं है वेद में न कोई ऐतिहासिक घटना है न किसी व्यक्ति विशेष की कथा है न किसी जाति वर्ग व मत मतान्तर का वर्जन है। वेद में मनुष्य को एक जाति माना है। पृथ्वी को एक परिवार माना है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद एक विषय का पुस्तक नहीं अपितु इसमें ज्ञान, कर्म व उपासना तथा आयुर्वेद, धनुर्वेद, अर्थ वेद, गन्धर्व वेद इसके उपवेद हैं। वेद में चिकित्सा विज्ञान जिसमें शल्य व काम चिकित्सा का समुचित वर्जन है। धनुर्वेद जिसमें युद्ध शस्त्र आदि का ज्ञान है, अर्थ वेद जिसमें अर्थ व्यवस्था का ज्ञान है। वेद में भूगर्भ, खगोल, वनस्पति, जीव, कृषि, शिल्प, रसायन, समाज, धर्म, गणित, ऊर्जा आदि समस्त विषयों का ज्ञान है।

प्राचीन काल में गुरुकुल एवं विद्यालयों में वेद की शिक्षा दी जाती थी जब यहां अंग्रेज आए उनका शासन स्थापित हुआ तब भारत में पुरानी शिक्षा के विद्यालय चल रहे थे, जिनमें प्राचीनकाल से संस्कृत व हिन्दी पढ़ाई जाती थी, परन्तु मुगलों के आधिपत्य से यहां उर्दू, अरबी के मदरसे भी खुले। अंग्रेजों ने इन विद्यालयों को नवीन शिक्षा से वंचित रखा, उस समय नई खोजें हो रही थी। जिन्हें अंग्रेजी भाषा में विद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाया जाता रहा था। संस्कृत के विद्यालयों को इस ज्ञान विज्ञान की शिक्षा से वंचितरखा गया। आज आधुनिक कहे जाने वाले विद्यालयों में परमाणविकी, शिल्प, गमित, समाजशास्त्र, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान पढ़ाई जाती है, जो अंग्रेजी भाषा में पढ़ाई जाती रही है। इसमें संस्कृत विद्यालय अलग-थलग रह गए उनकी उपेक्षा होती रही। संस्कृत विद्यालयों में विद्यार्थी कम होने लगे आधुनिक कही जाने वाली शिक्षा व विद्यालयों तथा कान्वैण्ट विद्यालयों की ओर अभिभावकों का रुझान बढ़ने लगा। आज संस्कृत विद्यालयों की स्थिति जीर्णशीर्ण होती जा रही है।

ऋषि दयानन्द प्राचीन व अर्वाचीन शिक्षा को एक साथ पढ़ाए जाने के पक्ष में थे, अपितु उनके अनुसार भारतीय शिक्षा जिसमें संस्कृत प्रमुख है और वेद जो संस्कृत में है, वेदों में जो आयुर्वेद अर्थात् आयु का विज्ञान है चिकित्सा विज्ञान का सम्पूर्ण ज्ञान है उसमें आधुनिक जो चिकित्सा सम्बन्धी अन्वेषण के फलस्वरुप ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसका समावेश किया जा सकता है। आयुर्वेद में काय एवं शल्य दोनों महत्वपूर्ण चिकित्सा ग्रन्थ है, जबकि प्लास्टिक सर्जरी जैसी शल्य चिकित्सा ही भारत से विदेशों में गई और अन्य भाषाओं में रुपान्तरित कर पढ़ाई जाने लगी।

वेद में गणित विषय है जिसमें सूर्य तारों आदि तक का रहस्य छिपा है, उसमें ही आधुनिक परमापविक भूगर्भ खगोल आदि का समावेश किया जा सकता है। गणित की

thearyasamaj.org

विद्या भी भारत से विदेशों में गई थी। शून्य का आविष्कार भारत में ही हुआ जो विदेशों में गया, अरब में गणित को आज भी हिन्द से बोला जाता है क्योंकि हिन्दु देश से गणित का ज्ञान वहां गया तब गणित को हिन्दसे के नाम से जाना जाता है।

कानून, दण्ड, राज्य व्यवस्था जितना भारतीय संस्कृत शास्त्रों में विधिवत व विस्तृत रुप से है अन्यत्र नहीं। आज जितना भी न्याय शास्त्र है वह भी प्राचीन ज्ञान के साथ समाविष्ट कर पढ़ाया जा सकता है, विदुर चाणक्य मनु ने समाज व न्याय पर विस्तृत प्रकाश डाला है।

चाणक्य अर्थात् कौटिल्य का अर्थशास्त्र आज भी महत्वपूर्ण है जिसे आधुनिक अर्थशास्त्र के साथ पढ़ाया जा सकता है। इसी प्रकार आज जितने भी विषय है वह प्राचीन शिक्षा के साथ पढ़ाए जा सकते हैं और जैसा कि अंग्रेजों के शासन में इन्हें अंग्रेजी भाषाई विद्यालयों में पढ़ाया गया संस्कृत अलग रखा गया यह मैकाले जैसों की कूटनीतिक चाल हो सकती है। उनका उद्देश्य भारत में ज्ञान-विज्ञान का प्रसार कम व भारतीय संस्कृति व संस्कृत को दूर रखते हुए अंग्रेजी संस्कृति का प्रभाव भारतीयों पर बढ़ाना था। यहां अंग्रेजों के पदार्पण से पूर्व यूरोप अमेरिका आदि सभी देशों में शिक्षा कृषि सामाजिक व्यवस्था अधिक विकसित नहीं थी। कृषि के वहीं पुराने साधन थे, हल-बैल व पुराने साधन ही कृषि कार्य में आते थे। युद्ध आदि की भी पुरानी प्रणाली थी। वस्त्र व भोजन आदि के भी पुराने साधन थे। यहां जब अंग्रेज आए, तब अनेक खोजें हुई व होती रही थीं। अंग्रेजी में उनका पठन-पाठन हुआ। भारतीयों पर इसका भ्रम यह हुआ कि सारा विकास अंग्रेजी भाषा से हुआ। अतः अंग्रेजी की ओर ही झुकाव बढ़ता रहा।

आज हम देखें तो पता चलेगा कि जो अत्यधिक विकसित देश चीन, जापान, फ्रांस, रुस आदि हैं, वहां आज का विज्ञान चिकित्सा, गणित, परमाणविकी खगोल व इतिहास भूगोल आदि अंग्रेजी में नहीं, अपितु उन देशों की निजी भाषा चीनी, फैन्च, जापानी, रसियन भाषा में ही पढ़ाया जाता है। वहां के बने उत्पादों पर जो विश्व भर में जाते हैं उनकी अपनी भाषा में ही शब्द लिखे होते हैं।

हम समझते हैं कि अंग्रेजी विकास की भाषा है ऐसी हमारी भूल है, जो विषय आधुनिक विद्यालयों में आधुनिक ज्ञान के रुप में पढ़ाए जाते हैं, वहीं विषय अपितु इससे भी अधिक और विस्तृत रुप में पढ़ो जाते थे। अपितु मानव को मानव बनाने जीवात्मा, परमात्मा प्रकृति का ज्ञान था। वर्ण व आश्रम व्यवस्था संस्कार एवं इतिहास, भूगोल सभी विषय थे महापुरुषों की गाथायें संस्कृत में थी। चरित्र का समाज का निर्माण था। आत्मबल बढ़ाने की शिक्षा थी, यदि आज भी हम प्राचीन परिपाटी की शिक्षा, शिक्षा के विषयों का अध्ययन-अध्यापन को देखें तो आज की शिक्षा से अत्यन्त उच्च कोटि का था। हमारी शिक्षा व्यवस्था श्रेष्ठ थी। तभी यहां याज्ञवलक्य, भर्तृहरि, वराहमिहिर, आर्यभट्ट, गौतम कणाद, चरक, सुश्रुत, अग्निवेश जैसे महान विद्वान हुए, जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता।

पता - गली नं. २, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा-२०३१३१

मूर्तिपूजा की निस्सारता : एक हास्य कथा

राजस्थान के एक ग्राम की बात है। एक अग्रवाल वैश्य पुत्रहीन था। उसे किसी ने कहा, भैरव जी को भैंसा भेंट करो अर्थात् उसकी बलि दो। भैरव प्रसन्न होर तुम्हें पुत्र देंगे। सौभाग्य से उसे पुत्र प्राप्ति हो गई। अब भैरव को उसकी भेंट (भैंसे की बलि) कैसे दे, अहिंसक वैश्य। उसने एक तरकीब सोची। एक भैंसा खरीद और मोटे रस्से से बांध कर भैरव मूर्ति के पास लाया। उसे भैरव की मूर्ति से बांधा तथा बोला - 'भैरव बाबा, मैं तो अहिंसक बनिया हूं, आपकी बलि प्रस्तुत है, यथा इच्छा इसका उपयोग करें।' वह तो चला गया और भैंसे ने अपने बंधन को हटाने के लिए जोर लगाया तो, रस्से से बंधी मूर्ति उखड़ गई। भैंस उसे लिए लिए भागा। आगे-आगे भैंसा, पीछे रस्से बंधे भैरव। गांव के सीमान्त पर देवी अपने गढ़ में बैठी, उसने यह दृश्य देखा तो बोली - 'अरे भैरु यह क्या हाल है। भैंसा तुझे खींचे लिए जा रहा है।' भैरव क्षुब्द होकर बोले - 'मठ में बैठी मटका करे' (आंखे मटकाती है) अग्रवाल को बेटा देती तो तेरा भी यही हाल होता।

प्रस्तुति : डॉ. भवालीलाल भारतीय

thearyasamaj.org

'सांसारिक जीवन के सुख व मोक्ष का प्रमुख आधार हमारा स्वास्थ्य'

- मनमोहन कुमार आर्य

वैचारिक

स्वास्थ्य मानव जीवन की वह अवस्था है जिसमें वह निरोग, बलवान व कार्य करने में औसत से अधिक कार्य करने की क्षमता से युक्त हो। शरीर के अन्नमय होने से इसका आधार भोजन है। शरीर में रहने वाली जीवात्मा एक चेतन तत्व है जो ईश्वरीय ज्ञान वेद के अनुसार ईश्वर व जीवात्मा के स्वरुप, इनके गुण, कर्म व स्वभाव को जानकर जीवात्मा के द्वारा ईश्वर की उपासना एवं ध्यान से स्वस्थ व बलवान बनती है। **स्वास्थ्य सुख का आधार होता है। हमारे जीवन की सभी क्रियायें भी सुख की प्राप्तिके लिए ही की जाती है। स्वास्थ्य अच्छा, निरोग व बलवान हो, इसके लिए स्वस्थ मन व स्वस्थ मन के लिये स्वस्थ शरीर एवं इसमें एक ज्ञान से युक्त आत्मा की आवश्यकता होती है।** ज्ञानी आत्मा की आवश्यकता इसलिए होती है कि वह मन को नियंत्रण में रखकर उसे सत्परामर्श दे सके। जीवात्मा व ईश्वर का साक्षात्कार करने वाले एक योगी वा वेद मनीषी ने एक महत्वपूर्ण श्लोक दिया है जिसमें वह कहते हैं कि जल से शरीर शुद्ध व स्वस्थ होता है, मन सत्य से शुद्ध होता है, विद्या व तप से मनुष्य की आत्मा और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध या पवित्र होती है। मन सत्य से शुद्ध होताहै। इसका अर्थ हमें जीवन को सुखमय बनाने व जीवन के लक्ष्य एवं साध्य की प्राप्ति के लिए मन को सत्य से युक्त करना होगा। मन को सत्य से कैसे युक्त किया जाता है, यह भी जान लेते हैं। सत्य किसी पदार्थ के सत्य व वास्तविक गुणों तथा उसके स्वभाव, चरित्र व व्यवहार के ज्ञान को कह सकते हैं। किसी पदार्थ में जो गुण है व उसका जो स्वरुप है, उसके विपरीत यदि हमारी मान्यता या ज्ञान है तो वह असत्य कहलाता है। वेद, ईश्वर, आत्मा व योग का ज्ञान तथा अनुभव रखने वाले प्रसिद्ध विद्वान् महर्षि दयानन्द सरस्वती का कहना है कि जो पदर्थ जैसा है उसको वैसा ही जानना व मानना तथा जैसा वह नहीं है, उसको भी जानना कि वह वैसा नहीं है, सत्य कहलाता है। सत्य को जानने में ही मन की सार्थकता होती है। मन सत्य से युक्त होकर तथा बुद्धि के संकल्प-विकल्प व इसके सत्यासत्य के विवेचन से तीनों अर्थात् मन, बुद्धि व आत्मा सत्य से संयुक्त होकर जीवन को सत्य मार्ग पर चलाते हैं, जिससे जीवन का कल्याण, उन्नति व अनेक लाभों में से स्वास्थ्य भी अनुकूल, दृढ़ व बलमान होता है और मनुष्य सच्चा सुख प्राप्त करता है। ऐसा मनुष्य जो भी भोजन करेगा वह ऐसा होगा जो शरीर को लाभ पहुंचाये और जिससे स्वास्थ्य अच्छा रहे।

हमें यह भी जानना है कि स्वास्थ्य का आधार मुख्यतः भोजन है। शास्त्र कहते हैं कि आहार, निद्रा, भय व ब्रह्मचर्य, यह चार स्वास्थ्य के आधार है। यद्यपि आहार में हमारे सभी ज्ञानी बन्धु मुख्यतः भोजन को ही सम्मिलित करते हैं, परन्तु शुद्ध वायु में श्वांस लेना व हमारे भोजन के घटकों का उत्पादन कृत्रिम रसायनिक खात के प्रयोग से न होकर प्राकृतिक खाद के प्रयोग से होना चाहिए, जिससे भोजन के पदार्थ हमारे स्वास्थ्य के लिए शक्तिप्रद व सुखदायी हो। भोजन के साथ-साथ हम जानते हैं कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए समय पर सोना और समय पर जागना भी आवश्यक है। सोने का आदर्श समय रात्रि १०.०० बजे व उठने का प्रातः ४.०० बजे है। प्रातः ४.०० बजे उठकर क्या करें, इसके लिए पहला कार्य तो सृष्टिकर्ता ईश्वर का चिन्तन करना व उसके पश्चात् शुद्ध वायु का सेवन करना और इसके लिये १ से २ घंटे तक भ्रमण करना है। भ्रमण के बाद व्यायाम करने से स्वास्थ्य को विशेष लाभ होता है। छोटे बच्चे को हम रोते हुए देखते हैं। वह अपने हाथ व पैरों को झटकता व पटकता रहता है। यह सब क्या है? वह उसका अपना व्यायाम है जो उसे ईश्वर या

thearyasamaj.org

प्रकृति ने सीखा कर भेजा है। हममें पलक झपकने या श्वांस लेने की प्रक्रिया स्वचालित रुप से कार्य करते ही। प्राणायाम से श्वसन प्रणाली को शक्ति व बल मिलता है। इन दोनों से हमारी आंखे व श्वसन प्रणाली समस्त आयु पर्यन्त स्वस्थ रहती है। यद्यपि वह पलक झपकने की क्रिया व श्वसन प्रणाली स्वचालित है परन्तु किसी भी क्रिया का एक या अधिक कारण हुआ करते हैं। यहां हम अपनी आत्मा को इसका कारण मान लेते हैं। सभी शरीरों में यह क्रिया सामान्य रुप से चल रही है। अज्ञानी से अज्ञानी आत्मा में भी ऐसा होता है, इससे लगत है कि आत्मा इसे न चलाकर, आत्मा से इतर सत्ता जिसे आध्यात्मिक लोग ईश्वर कहते हैं, उससे संचालित है, यह स्वीकार करना पड़ता है। यह एक सिद्धान्त है कि जिस कार्य का कारण कोई भी मनुष्य सिद्ध न हो, उसे ईश्वर से संचालित मान लेना चाहिए। इससे हमें अनेक प्रकार से लाभ ही होता है, हानि कुछ नहीं होती। कुछ बन्धु ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते हैं। इस विषय में यह तथ्य है कि यदि ईश्वर न हो तो भी ईश्वर को मान लेने पर उसको मानने वालों की कुछ हानि होती परन्तु यदि ईश्वर है और वह उसे नहीं मानते तो उसकी हानि ही है, क्योंकि वह उसे जानने व उससे प्राप्त होने वाले लाभों से वंचित रह जाते हैं और अपने असत्य व्यवहार के कारण दण्ड भी पातेहैं। हमने स्वास्थ्य के आधार के रुप में भोजन या आहार की बात की व उसके बाद निद्रा की बाद की। स्वास्थ्य का एक आधार भय भी कहा जाता है। भयभीत व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। यह भयातुर रहता है जिससे वह अस्वस्थ रहता है। भयभीत रहना भी स्वास्त्य के लिए अहितकर है। अस्वस्थ व्यक्ति के उपचार में इस तथ्य का भी ध्यान रखना होता है कि कहीं वह किसी से भयातुर तो नहीं है। उसके भय के कारण को दूर करने से वह स्वस्थ हो जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान से सबसे बड़ा लाभ भय का निवारण होता है। अध्यात्म के अध्ययन से हमें पता चलता है कि प्रत्येक प्राणी की मृत्यु अवश्य होनी है जो उसके पूर्व जन्म के प्रारब्ध या भाग्य तथा वर्तमान जीवन के अनेक कारकों पर आधारित है। वर्तमान जन्म में पुरुषार्थ से आयु को बढ़ाया जा सकता है। इस जन्म में सभी प्राणियों की मृत्यु होना निश्चित है और मृत्यु के बाद पुनर्जन्म भी सुनिश्चित है जो कि हमारे प्रारब्ध, भाग्य व कर्मों के आधार पर होगा। **इस पुनर्जन्म के सिद्धान्त, इसकी वास्तविकता व ज्ञान से अच्छे कर्मों या कार्यों को करने की प्रेरणा मिलती है और मृत्यु का भय दूर हो जाता है।** इसके पश्चात् ब्रह्मचर्य या संयम का स्थान है। ब्रह्मचर्य एक प्रकार से संयम ही है। संसार में असंख्य अच्छे व बुरे विषय है। यदि हम अनुचित विषयों का ध्यान, चिन्तन व मनन करते हैं तो इससे स्वास्थ्य के लाभ के स्थान पर हानि होती है। हमें अपने मन को नियंत्रित करके उसे सत्य व ज्ञान की प्राप्ति में लगाना चाहिये और ईश्वर, आत्मा व प्रकृति के सत्य ज्ञान को प्राप्त करना चाहिये। ऐसा हो जाने पर हम विज्ञान व उससे जुड़े अनेकानेक विषयों का अध्ययन कर सकते हैं। विज्ञान, चिकित्सा, वाणिज्य, अर्थशास्त्र व इंजीनियरिंग आदि अनेक विषय हैं जिनकी हमें हमारे समाज व देश को आवश्यकता है। इसको व्यापक रुप से जानना व उनका व्यक्तिगत, सामाजिक व देश के लिए उपयोग करने के लिए ब्रह्मचर्ययुक्त जीवन सहायक होता है। **जीवन को ब्रह्मचर्यपूर्वक व्यतीत करने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है और यह भी स्वास्थ्य का प्रमुख आधार है।**

स्वास्थ्य के दो और भी आधार है जिनमें से एक आसन व दूसरा प्राणायाम है। योग दर्शन में योग के आठ अंगों में से दो अंग है, आसन, प्राणायम। आसन का समावेश व्यायाम में हो जाता है। इसका उल्लेख हम कर चुके हैं। हमें प्राणायाम को भी जानना है। प्राणायाम भी प्राणों का व्यायाम ही है। प्राणों को दृण व अधिक उपयोगी बनाने के लिए प्राणायाम किया जाता है। प्राणायाम लम्बा श्वांस लेकर अधिक शुद्ध वायु व आक्सीजन को अधिक से अधिक मात्रा में अपने फेफड़ों में पहुंचाना और अधिक से अधिक फेफड़ों की दूषित वायु कार्बन डाईआक्साईड गैस को लम्बे बाहरी श्वांस द्वारा बाहर निकालना होता है। जब हम हृदय के रक्त की शुद्धि सामान्य गति से श्वांस लेने से अधिक मात्रा में होती है और अनेक रोगों से मुक्ति मिलती है। जब हम प्राणायाम कर रहे होते हैं तो इससे हमारे शरीर के छोटे-बड़े अंग व प्रत्यंग प्रभावित होते हैं जिससे उनका व्यायाम होने में उनकी शक्ति व कार्यक्षमता बढ़ती है व वह पुष्ट होते हैं। आरोग्य की प्राप्ति के साथ सभी अंग अधिक समय के लिए कार्य योग्य

thearyasamaj.org

हो जाते हैं जिससे हमारी आयु में भी वृद्धि होती है। अतः सभी को अपनी आयु व शारीरिक स्थिति के अनुसार योग के आसन व प्राणायाम को करना चाहिए।

यहां हम स्वास्थ्य के तीन आधारों ऋतुभुक, हितभुक व मितभुक की भी चर्चा करना चाहते हैं। ऋतभुक ऋतु के अनुसार भोजन के पदार्थों के सेवन को कहते हैं। मुख्यतः हमारे देश में शीत, ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतुयें होती हैं। इन ऋतुओं के अनुसार व अनुकूल ही हमें भोजन करना चाहिये। अपने शरीर की प्रकृति व स्थिति के अनुसार भोजन हितभुक कहा जाता है तथा भूख से कुछ कम भोजन करना मितभुक कहा जाता है। भोजन निश्चित समय पर हो तो लाभदायक होता है। असमय के भोजन का स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य के प्रति सजग व्यक्तियों को इन सभी नियमों को भी ध्यान में रखना चाहिये। लेख के आरम्भ में हमने मन को सत्य से युक्त या सत्याचरण में प्रवृत्त करने की बात कही है। मनुष्य का मन ही सुख व दुःख का कारण हुआ करता है। शास्त्र मे इसे इस रुप में कहा गया है कि मनुष्य का मन ही बन्धन अर्थात् दुःख का कारण तथा बन्धनों से मुक्ति, सुख अर्थात् मोक्ष का कारण हुआ करतीं है। सुखों की प्राप्ति एवं भोग अच्छे स्वास्थ्य से ही सम्भव है। ईश्वर के सत्य स्वरुप का ध्यान व चिन्तन करते हुए उसकी प्रार्थना व उपासना करना भी शरीर व दीर्घायु बनाने में उपयोगी रहता है।

अतः स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए शुद्ध, पवित्र व स्वास्थ्यवर्धक भोजन करना चाहिए और संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए अपने शरीर को स्वस्थ बनाकर सुखी रहना चाहिये। लेख को विराम देने के पूर्व हम यह कहना चाहते हैं कि हमें अपना यह शरीर ईश्वर व माता-पिता से मिलता है, यह हमारे अपने अधिकार में नहीं है, परन्तु स्वास्थ्य के नियमों का पालन कर अपने शरीर को स्वस्थ व बलिष्ठ बनाना हमारे अपने हाथों में है। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो रोगी हो सकते हैं, जिसका परिणाम दुख व मृत्यु के रुप में सामने आता है और हमारा जीवन क्लेशों से भर जाता है। क्लेश की स्थिति का निवारण रोग को आने ही न देना है व इसके लिए हमें स्वस्थ्य के नियमों का पालना करना है।

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

हुआ खून ऋषि के अरमानों का

सच पूछो तो दयानन्द तेरे
अरमानो का खून हुआ है
तेरे नाम की डफली बजा,
हर सुविधा को हमने छुआ है
सब त्याग तपस्या भूल गये हम,
बस मंत्रों से उपदेश हैं देते
यज्ञमय जीवन बना न अपना
पाँच महायज्ञ संदेश देते
कथनी करनी में आया अन्तर
अपने ही घर में रचते षड़यंत्र
पद ने भुलाई सारी ऋचाएँ
कैसे सुनाओगे वेद मंत्र
मोहन अपनी दशा संवारे
कथनी करनी सभी निहारें
भेद दिलों से सब हट जायें
गम के बादल सब छंट जायें ।।

- मोहनलाल चड्डा, १७३, एमआईजी-II, हुडको भिलाई

"सूचना"

एन.टी.पी.सी. कोरबा (छ.ग.) के विभागीय चिकित्सालय में फार्मेसी ऑफिसर के पद पर विगत ३२ वर्षों से कार्यरत **ओम कुमार आर्य** अब स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति (वीआरएस) के पश्चात् **"भजनोपदेशक"** के रुप में सेवायें आर्यजगत् को देने को तत्पर हैं। इच्छुक व्यक्ति संस्थायें निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

ओम मुनि वानप्रस्थी "भजनोपदेशक" (ओम कुमार आर्य),

एम.आई.जी. १८१/१२, आवास विकास कालोनी, विवेकानन्द नगर, रिंग रोड, रुद्रपुर, जनपद उधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड) पिन - २६३१५३, दूरभाष : ०७८६९८२५६८८, ९४२५२८३९२५

thearyasamaj.org

अभिव्यक्ति

सिद्धान्त विहीन होती ऋषि मुनियों की सन्तानें

– डॉ. हर्षवर्धन शर्मा

आज भारतवर्ष में त्रिकालदर्शी ऋषि, मुनियों की संतानें, सन्यासी, सन्त-जन अपने निजी स्वार्थ, धन-लोलुपता में दिग्भ्रमित होकर विवेकशून्य होते जा रहे हैं, उन्हें अपने महर्षियों के दिखाए रास्ते पर अपने वेद, गीता, रामायण एवं आध्यात्मिक दर्शन पर तनिक भी विश्वास नहीं है, केवल धन की लालसा में मनोकामनाएँ मे इधर-उधर भटक रहे हैं, पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में केवल अर्थ और काम में ही लिप्त हैं, धर्म और मोक्ष जो जीवन का मुख्य उद्देश्य है, उसे तिलाजंली दे दी गयी है, धन कहीं से भी आये किसी प्रकार से आये चाहे कितना ही निकृष्ट कार्य क्यों न हो धन आना चाहिये, जबकि हमारे धर्मग्रन्थों में सन्मार्ग से प्राप्त धन को ही जीवन में स्थान दिया गया है। हम अपने स्वार्थ में आदर्शों को भूलते जा रहे हैं।

हमें अपना आदर्श विधर्मियों को बनाने में कोई भी संकोच नहीं है और विधर्मियों को महामण्डित करने में आपस में लड़कर धर्म की हानि कर रहे हैं।

हमारे यहां पर ३३ कोटि देवता बताये गए हैं, उसके पश्चात भी हमें देवी-देवता कम पड़ जाते हैं और हम विधर्मियों को आदर्श मानकर उन्हीं पर विश्वास करते हैं, पीरों पर भी हिन्दु ही जाते हैं और कब्र का प्रसाद भी खाते हैं, जबकि सभी बुद्धिजीवी जानते हैं कि पीर क्या है ? ओ माई गॉड भी हिन्दू ही बोलता है हमने किसी भी विधर्मी को अपनी उपासना छोड़कर हिन्दू देवी देवताओं को आदर्श मानते हुए नहीं देखा है, जबकि भारतवर्ष में अधिकतर ऋषि मुनियों की सन्तानें हैं, फिर भी वे उन्हें अपना स्वार्थ आदर्श नहीं मानते हैं।

आज भारत वर्ष में सांई बाबा के नाम पर समाज में एक हलचल मच गयी है, शंकराचार्य स्वामी स्वरुपानन्द जी ने ऐसा कौन सा हिन्दू धर्म के विरोध में क्या कह दिया जो आपस में ही हिन्दू धर्म को मानने वाले लड़ रहे हैं तथा स्वार्थी, शंकराचार्य विरोधी सन्यासी स्वरुपानन्द जी के पीछे पड़ गये तथा उनके पुतले फूंके गये, न्यायालय में केस दर्ज किये गये, तरह-तरह की अशोभनीय टिप्पणी की गयी, हम अपने घर में स्वयं आग लगाकर तापने लगे। हम मान सकते हैं कि स्वरुपानन्द जी राजनैतिक एवं विवादित संन्यासी हो सकते हैं किन्तु सांई बाबा के विषय में स्वरुपानन्द जी ने ऐसा क्या गलत कह दिया कि जो स्वरुपानन्द जी का विरोध होने लगा, स्वरुपानन्द जी ने सांई बाबा के बारे में जो अपना मत दिया है वो किसी भी प्रकार से हिन्दू धर्म, वैदिक धर्म के बिल्कुल भी विपरीत नहीं है, अपितु उन्होने अज्ञान हिन्दू भक्तों को जागृत करने एवं सन्मार्ग दिखाने के लिये अपना व्यक्तव्य दिया है न किसी की आस्था को ठेस पहुंचाने के लिए।

जो भी सांई बाबा के भक्त हैं उनकी दृष्टि में हिन्दू धर्म के सभी देवी-देवता तुच्छ हैं, वे सब हिन्दू धर्म को मानने वाले हैं सांई का उदय लगभग ५० वर्ष पूर्व ही हुआ है, वो भी टी.वी. के माध्यम से न कि धर्म शास्त्रों से जो सांई के नाम पर लड़ने मरने को तैयार हैं क्या उनकी अपने देवी-देवताओं से अपने धर्म-ग्रन्थों से आस्था हटे, ये कितना उचित है, आज सांई बाबा को धन का भण्डार मान लिया गया है, कि सांई की पूजा करने से हमें धन वर्षा एवं मनोकामना पूर्ण होगी, जबकि हमारे यहां पर धन की उपासना के लिए लक्ष्मी एवं कुबेर की पूजा की जाती है, लोगों के मन में एक विश्वास हो गया है कि सांई बाबा ही चमत्कार दिखाते हैं अन्य देवी देवता नहीं।

भक्त रैदास ने भी अपने जीवन में साक्षात् चमत्कार दिखाए थे किन्तु इन हिन्दू भक्तों ने कभी भक्त रैदास को वह सम्मान नहीं दिया जो एक भक्त को मिलना चाहिये था और

thearyasamaj.org

न कहीं पर भक्त रैदास के गली-गली मंदिर बने और न ही व्यापारियों ने अपने-अपने प्रतिष्ठान का नाम रैदास के ऊपर लिखा, जैसा कि सांई के नाम पूरा व्यापार सांईमय हो चुका है ऐसा सैकड़ों वर्ष व्यतीत होने के पश्चात भी रैदास के नाम पर नहीं हुआ, रैदास के कुछ मन्दिर मलिन बस्तियों में देखे जा सकते हैं, पाठक स्वयं सच्चे मन से सोच सकते हैं कि सांई की तरह से भक्त रैदास को भारत भूमि में वो सम्मान नहीं मिला जो कि एक विधर्मी सन्त फकीर को मिल रहा है और हम विधर्मी को महामण्डित करने में आपस में लड़कर करके हिन्दू धर्म की आस्था को ठेस पहुंचा रहे हैं, समाज में देखा जा रहा है कि हिन्दुओं के प्रतिष्ठान धर्म कांटे आदि पर मुस्लिम धर्म का प्रतीक, इसाई धर्म का प्रतीक, सिख पंथ का प्रतीक, हिन्दू धर्म के चिन्हों के साथ-साथ लिखा होता है किन्तु विधर्मी के प्रतिष्ठानों पर किसी भी हिन्दू देवी-देवता का प्रतीक विधर्मी अपने यहां अंकित नहीं करते फिर भी हिन्दू उनके प्रतिष्ठान पर जाता है, किसी विधर्मी को हिन्दू के वोट लेने के लिये हमने कभी माथे पर तिलक लगाए हुए, कलावा बांधे हुए, होली का गुलाल मलते हुए शायद ही देखा हो, गिरा तो हिन्दू ही गिरा है न कि विधर्मी, विधर्मी को कभी भी अपने धर्म से समझौता करते हुए नहीं देखा है हिन्दू ही धन के लालच में वोट के लाल में अपनी आस्था को बदलकर विधर्मी की टोपी पहनकर पीरों की पूजा करके कब्रों का प्रसाद खाते हुए तथा अन्य भी कार्य करते हुए देखा जा सकता है, जैसे आज देश में नेता छद्म धर्मनिरपेक्ष (धर्मविहीन) हो करके अपनी-अपनी पूजा कराके अपने को महामण्डित प्रस्तुत कर रहे हैं, वास्तविक धर्म से भटक गये हैं अपने-अपने स्वार्थों में भक्तों को सही रास्ते की ओर प्रेरित नहीं कर रहे हैं।

जो भक्त सांई को शिव का अवतार बताते हैं तो क्या शिव ने अवतार लिया है, सनातन धर्म में जो भी अवतार हुए हैं क्या किसी हिन्दू धर्म के सन्त फकीर महात्मा ने मस्जिद में निवास किया है और न ही प्रवचन किया और न ही किसी अवतार ने व्रत रखने का विरोध किया। सांई बाबा की वेशभूषा एवं उनका आचार विचार स्वरुप ऋषि मुनि, देवी-देवताओं का नहीं है। किसी भी हिन्दू धर्म के साधू सन्त ने इस प्रकार का अंगरखा पहना और न ही सिर पर इस प्रकार का अंगोछा बांधा। शिव का अवतार बताना क्या सनातन धर्म का अपमान नहीं है।

भगवान कृष्ण सखाओं के साथ गेंद खेलते थे न कि सांई बाबा की तरह कच्चे, क्या कोई अवतार कुत्ते से अजान देने को नवाज पढ़ने को कहेगा, धर्मग्रन्थ किसी का भी पढ़ना गलत नहीं है किन्तु आचरण में अपना धर्म ही लाया जाये, भगवान कृष्ण ने कहा है कि - अपने धर्म में ही मरना श्रेयस्कर है। दूसरे का धर्म भय देने वाला है। मन्दिरों में देशी घी दीपक जलता है न कि तेल का, मस्जिदों में तेल का दिया जलता है, पीरों की पूजा ब्रहस्पतिवार को ही विशेष होती है। जबकि सांई बाबा ऐसा ही करते थे।

जो लोग सांई बाबा को हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रतीक मानते हैं और सांई बाबा कहते हैं कि सब का मालिक एक है, तो सांई बाबा ने गुरुद्वारों, बौद्धस्तूप तथा चर्चों से मानवता का संदेश क्यों नहीं दिया। अकेले हिन्दू मुस्लिम एकता से मानवता का पालन नहीं होगा और न ही किसी चर्च, गुरुद्वारा, बौद्धस्तूप को अपना निवास बनाया। हिन्दू-मुस्लिम एकता ही क्या काफी है, यह सब गुमराह करने का धोखा है, क्या इस एकता से आज तक हिन्दू मुस्लिम झगड़े बंद हो गये, क्या विधर्मियों द्वारा अत्याचार बंद हो गये ? भगवान कृष्ण ने गीता में संदेश दिया है कि-

यजन्ते सात्विका देवान्य यक्ष रक्षांसि राजसाः।
प्रेतान्भूतगणाश्चान्ये यजन्ते तामसाजनः ॥

ऐसा प्रतीत होता है कि जो शंकराचार्य विरोधी हैं वे ही साधु संत सांई का समर्थन कर रहे हैं। सांई बाबा मोहर्रम भी मानते हैं, ईद के दिन मस्जिद में नवाज पढ़ाते थे, हिन्दू लड़की की शादी मुस्लिम लड़के से कराई क्या कोई सनातन धर्म का संत ऐसा करेगा, क्या ये सनातन धर्म का अपमान नहीं है। सांई बाबा के अवतरित होने से भारत में कितने पापों में कमी आई अपितु पाप अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। सांई बाबा योगी हो सकते हैं न कि भगवान। सनातन धर्म के किसी भी अवतार ने धूम्रपान नहीं किया, अपितु धर्मग्रन्थों में धूम्रपान की निन्दा की है।

-शेष अगले अंक में

thearyasamaj.org

वैज्ञानिक

'सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्'

मंत्रांश का विज्ञान

- डॉ. रामप्रकाश शर्मा 'सरस'

मन्त्रों में निहित ज्ञान-विज्ञान बहुत ही सूक्ष्म है उसे संवेदना के सूक्ष्मतर स्तर पर अनुभूत किया जा सकता है। शब्दोच्चारण के द्वारा जो ध्वनि आवर्त निर्मित होता है वह वायुमंडल के प्रभाव से प्रभावित भी करता है। बुद्धिमान लोग वेदमन्त्रों के माध्यम से ही ईश्वरोपसना करते हैं। मनुष्यकृत श्लोकों/गीतों/भजनों के माध्यम से भावोत्पादकता तो लाई जा सकती है किन्तु जो दिव्यशक्ति के सामीप्य का अनुभव, वेद मन्त्रों के द्वारा कृत प्रार्थना से होता है वह मनुष्यकृत छन्दों से नहीं हो सकता, उसका अनुभव अनिवर्चनीय है।

इस लेख में **'त्र्यम्बकं यजामहे'** वेद मन्त्र के मंत्रांश के विज्ञान से साक्षात्कार कराने का स्वल्प प्रयास है। इस मन्त्र का अनेक आराधक अपने-अपने भाव से प्रातः सायं जपोच्चारण करते हैं। कष्ट-निवृत्ति, सुखद-प्राण, दिव्य जीवन तथा पति-प्राप्ति इत्यादि उद्देश्यों हेतु आर्तहृदय, भाव-विह्वल होकर प्रभु के करुणामय स्वरूप को स्मरण कर पुकारते हैं। प्रार्थना, तभी सफल हो पाती है जब प्रार्थी अपनी सम्पूर्ण शक्ति से परिश्रम निरंतर करते-करते प्रभु की शरणागत हो जाता है। श्रमहीन शब्दों की प्रार्थना अधूरी और लंगड़ी है, प्रार्थ्यभाव को सतत स्मरण करते हुए श्रम सापेक्ष है। जिस प्रकार कोई रोगी स्वस्थ होने की कामना तो करता हो, लेकिन औषध सेवन नहीं करना चाहे तो उसके स्वस्थ होने की सम्भावना शून्य है।

'सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम्' प्राकृतिक पदार्थों से निर्मित एवं वीर्य आदि की अन्तः सुगंधि से मनुष्य की बुद्धि और स्मरण शक्ति पुष्ट होती है। जैसे अत्यधिक दुर्गन्ध के कारण चक्कर आने लगता है और सोचने समझने, स्मरण करने की शक्ति क्षीण हो जाती है वैसे ही सुंगधित पदार्थों के सूंघने से, ब्रह्मचर्य (वीर्य) के द्वारा स्मरण शक्ति तीव्र एवं बलिष्ठ होती है। उसकी ऊर्ध्व गति मस्तिष्क को अधिक सक्रिय और तेजस्वी बनाती है। शरीर बल के द्वारा मुखमंडल पर शांति कान्ति और ओज की झलक दिखाई देने लगती है जिससे शरीर की पुष्टि के साथ-साथ बुद्धि और स्मरण शक्ति, रूप-सौन्दर्य आदि की भी अभिवृद्धि होती है। ब्रह्मचर्य युक्त नियमित जीवन और सुगंधित पदार्थों के समुचित सेवन से स्मरण शक्ति आदि में भी अद्‌भुत लाभ होता है। केवल मन्त्रोच्चारण करते रहने से यह सम्भव नहीं है बल्कि इसका विज्ञान समझने की आवश्यकता है। यज्ञ की सुगंधि वातावरण को स्वस्थ, जीवन योग्य, प्राणी मात्र के लिए लाभप्रद बनाती है और वीर्य शरीर को पुष्ट कर रोग रहित, ओजस्वी, तेजस्वी, बलवान तथा मुख पर कांति प्रदान करता है। श्रेष्ठ लोकोपकार के कार्यों से समाज में कीर्ति एवं यश की वृद्धि होती है जिससे मनुष्य का बौद्धिक विकास तीव्रता से होता है। मानव मस्तिष्क मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित है- दोनों ही भागों में एक तरल पदार्थ स्नायुतंत्रिकाओं में संचरित होता है। मन्दगति से मन्त्रार्थ या मन्त्रभाव का चिन्तन करते हुए मन्त्रोच्चारण करने से न केवल उस स्थान विशेष के वायुमंडल में ऊर्जा-विस्तारण होता है अपितु मस्तिष्क में भी रासायनिक परिवर्तन होता है। शरीर में भी रोम स्फुरण, अन्तः हृदय में आनन्दानुभूति होने लगती है। तोता पाठ करने से यह सब कदापि संभव नहीं है।

सुगंधि तथा ब्रह्मचर्य (वीर्य) इन दोनों के द्वारा मस्तिष्क अधिक क्रियात्मक, रचनात्मक, सकारात्मक आदि गुणों से प्रेरित होता है। तब इस मन्त्र के जपोच्चारण का लाभ व्यष्टि से समष्टि में व्यवहृत एवं विकसित हुआ प्रतीत होता है। इन्द्रियातीत अर्थात् अतीन्द्रिय अनुभूतियों का जो वर्णन योग दर्शन में किया है उसके दिव्य अनुभव तथा अति सूक्ष्म तरंगों का स्पन्दन अनुभव होने लगता है।

जिसके मस्तिष्क में सद्भावों का अभाव (सुगंध) और शरीर में ब्रह्मचर्य (वीर्य) का अभाव है उसके लिये न तो सुगंधि मिलती है और न ही पुष्टि और न ही इन दोनों के द्वारा वृद्धि की प्राप्ति होती है।

thearyasamaj.org

'**सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्**' यह वैज्ञानिक शब्द क्रम है -

उपासक, सद्भावों, सत्कार्यों और सुगंधित पदार्थों के साथ-साथ संयम पूर्वक, अपने जीवन के सर्वतोमुखी विकास के लिए याचना करता है तब उसे इस मन्त्र की साक्षात् शक्ति का अनुभव प्राप्त होता है जिसने जीवन में श्रेष्ठ कार्यों और शरीर ऊर्जा का संचयन नहीं किया वह प्राणान्त के समय अधिक असहनीय बेचैनी और वेदना अनुभव करता है। प्राणान्त के समय शरीर का आभामण्डल सिकुड़ने और मुरझाने लगता है। उसके गले में पहनी हुई माला के फूल जल्दी मुरझाने लगते हैं। आत्मा सृष्टि कर्ता के विधानानुसार शरीर को त्यागती है - और शरीर प्राणों के वहिर्गमन की स्थिति में अत्यधिक बेचैनी की स्थिति पैदा कर देते हैं। यदि "**सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम्**" का वास्तविक अर्थ जीवन में प्रयोग किया जाए तो पके हुए खरबूजे की भांति उसकी डाल स्वयं अलग हो जाती है। वैसे आत्मा शरीर को सुखपूर्वक त्याग देती है। आत्मा और शरीर के बीच में प्राण सेतु स्वरूप हैं। आत्मा सम्पूर्ण शरीर में रहती हुई भी वह एक देशीय है। मृत्यु बंधन और मृत्यु के पाशों से मुक्ति के लिए "**सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम्**" की इस त्रिपुष्टि को समझना और उसकी वैज्ञानिकता को अपनाने की आवश्यकता है। तभी यह मन्त्र साक्षात् रूप से फलित होगा। मन्त्र में निहित विज्ञान और उसके प्रयोग की सबसे बड़ी और प्रथम प्रयोगशाला मानव शरीर है यह साधना के सूक्ष्म स्तर पर अनुभूति के द्वारा प्राप्य है यह अनुभूति किसी को भी प्राप्त हो सकती है जो पवित्र अन्न भोजनादि आहार-व्यवहार, चिंतन की सतत यज्ञ-शाला में तपोभूत मनुष्य हैं उन्हें ही इस गहन विज्ञान की प्राप्ति संभव है।

पता - ३६ सी-४/३३१, प्रथम तल, सैक्टर-६, रोहिणी, दिल्ली-११००८५

वशीकरण - मन्त्र

लुब्धमर्थेन गृह्णीयात्, क्रुद्धमञ्जलिकर्मणा।
मूर्खं छन्दोऽनुवृत्तेन, याथातथ्येन पण्डितम्॥ (चाणक्य)

भावार्थ :- नीतिशास्त्रमर्मज्ञ चाणक्य के मतानुसार निम्नाङ्कित व्यक्तियों को निम्न प्रकार से बुद्धिमान पुरुष वशीभूत करें।

१. जो लोभी पुरुष हो उसे धन के द्वारा आधीन करना चाहिए। आप उसे धन दे दीजिए वह आपका दास बन जाएगा।

२. क्रोधी जो हो उसे नम्रता से हाथ जोड़कर आप वशीभूत कर सकते हैं। क्रोधी को शान्त करने का और कोई मार्ग नहीं है।

३. मूर्ख को आप, जैसा वह बोले हाँ में हाँ मिलाकर ही अपना बना सकते हैं। तर्क-वितर्क से वह आपकी बात नहीं मान सकता।

४. पण्डितों को आप यदि अपना कल्याण चाहें तो यथार्थ स्थिति बतला दें। सत्य से बढ़कर पण्डितों को प्रसन्न करने का और कोई मार्ग नहीं है। यतः जो पण्डित है, वह तो बिना कहे-बतलाये ही सब कुछ जान जावेगा और समझ लेगा, अतएव विचक्षण पुरुष से कभी कोई बातें नहीं छिपानी चाहिए।

- सुभाषित सौरभ

thearyasamaj.org

सांस्कृतिक

नारी सम्मान

अक्सर हम महिला सशक्तिकरण की बातें करते रहते हैं। इस विषय पर प्रचार प्रसार माध्यम, इलेक्ट्रानिक मीडिया आदि गरम रहता है तथा महिला आयाम जैसी संस्थायें भी कार्य करती है। भ्रूण हत्या, शिक्षा के मामले में भेदभाव नारी सुरक्षा ज्वलंत विषय रहे है। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे समाज में नारी असुरक्षित तथा उत्पीड़न का शिकार है तथा पाश्चात्य संसार में नारी का बहुत सम्मान है और वहां कोई समस्या नहीं है। पर क्या यह वास्तविकता है। नहीं वास्तविकता इससे परे हैं। हमारी संस्कृति का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है, नारी सम्मान, हमारे शास्त्रों में भी लिखा है।

यत्र नार्य स्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

नारी का सम्मान हमारी संस्कृति का मूल मंत्र है। जब-जब नारी का अपमान हुआ उस मूल सुधार के लिये युद्ध हुये हैं। यदि व्यक्तिगत अपमान हुआ तो प्रायश्चित और राज्य अथवा व्यवस्था के द्वारा हुये तो युद्ध। रामायण से लेकर महाभारत तथा वर्तमान युग तक रावण का वध हो अथवा कौरवों का विनाश इन सबका मूल कारण नारी अपमान ही है। आदिल शाह सल्तनत का विनाश और छत्रपति शिवाजी द्वारा हिन्दवी साम्राज्य की स्थापना नारी सम्मान के विषय पर हुई थी।

रामायण काल में महारानी कैकेयी युद्ध क्षेत्र में जाती थी। महाभारत में मादरी और द्रौपदी शस्त्र विद्या में निपुण थी और गार्गी, अरुन्धती जैसी ऋषि पत्नियां शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी थी। मगधकार में तो कलिंग में नारी सेना थी। यह सब इस बात का प्रतीक है कि हमारे राष्ट्र में नारियों का सदा सम्मान रहा।

वर्तमान काल में कितूर की रानी चेन्नमा, महारानी दुर्गावती और प्रसिद्ध नाम महारानी लक्ष्मीबाई से सब परिचित है। इससे असहमति जताने वाले लोग अपवाद गिना सकते हैं। परन्तु सत्य को नकार नहीं सकते। नवरात्रों में कंजक पूजन अथवा कुमारी पूजन से तो सभी परिचित है। यह परम्परा तो सभी निभा रहे हैं।

- प्रो. सुभाषचन्द

सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं के स्थान छोड़ना व आरक्षण समाज में व्याप्त नारी सम्मान की भावना पर ही आधारित है। हां, कुछ इसे अन्य अलंकरण भी दे सकते हैं। वर्तमान काल में जो भी अपवाद प्रस्तुत किये जा सकते हैं वह योजनाबद्ध तरीके से स्थापित की गई दास मानसिकता के कारण और समाज में सामर्थ्यहीनता का प्रमाण है।

हजारों वर्षों से अपने समाज और राष्ट्र में नारियों के सम्मान की रक्षा करने में असफलता तथा असमर्थता को अनेक अलंकरण और कारण प्रस्तुत किये गये। जिसका परिणाम समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा परम्परायें हैं जिनका विश्लेषण आवश्यक है। परन्तु यह तो स्पष्ट है कि आज महिलायें जीवन के हर क्षेत्र में सहभागिता निभा रही है।

उस तथ्य से सहमत न होने वाले प्रबुद्धजन अनेक समस्याओं अथवा प्रथाओं का उदाहरण दे सकते हैं। उदाहरण के लिये :- (१) सती प्रथा (२) विधवा विवाह (३) नारी अशिक्षा (४) दहेज प्रथा (५) भ्रूण हत्या (६) बाल विवाह (७) अन्तर्जातीय विवाह।

(१) सती प्रथा :- हमारे अर्थात् सनातन धर्म के आलोचक तथा तथाकथित उदारवादी प्रबुद्ध जन जो आलोचना करना अपनी शान समझते हैं और इन कुरीतियां/दोषों का कारण और निदान ढूंढने के स्थान पर हिन्दू धर्म की कठोर आलोचना अथवा अपमानें करते हैं। मैं यहां पर पुनः स्पष्ट कर दूँ कि मैं किसी दोष अथवा कुरीतियों का समर्थन नहीं करता हूं वरन् उनको रोग समझकर उनका कारण जानकर, उनके निदान की बात करता हूं क्योंकि समय के साथ-साथ दोषों का उत्पन्न होना प्राकृतिक नियम है। इसे हम मंत-जमंत अथवा प्राकृतिक ह्रास कहते हैं। उसे चतवकनबज समपि बलवसम अथवा जीवन चक्र भी कह सकते हैं। परन्तु मैं इसे एक

thearyasamaj.org

प्राकृतिक प्रक्रिया अथवा छंजनतंस च्तवबमे कहना पसंद करुंगा। परन्तु हिन्दू धर्म का सही सम्बोधन सनातन धर्म है, सनातन अर्थात् नया रहने वाला।

अब मैं इन दोषों के कारण पर विचार रखता हूं। हमारे वैदिक काल से लेकर भारत में मुगलों के आगमन तक, भारत भूमि में यह समस्यायें नहीं थी। विभिन्न राजा तथा राजा हुये और उन्होंने अपने अपने अधिकार क्षेत्र में राज्य किया। राज्य किसी का भी हो परन्तु राष्ट्रीय स्वाभिमान व्याप्त था। मौर्य काल, गुप्तकाल और सम्राट हर्षवर्धन तक यह कुरीतियां नहीं थी। इसके बाद अनेक बर्बर जातियों ने भारत पर आक्रमण किये और वे सब हमारी संस्कृति में घुल मिलकर इसका अभिन्न अंग बन गई।

इस्लाम धर्म के उदय के बाद परिस्थितियां बदल गी। इस्लाम धर्म, अन्य धर्मों के प्रति नफरत के विचारों के आधार पर अस्तित्व में आया। और चूंकि इसका आधार धर्मान्धता थी। अतः इसके प्रचार का माध्यम तलवार और नफरत थी। परिणाम यह हुआ कि अरब जातियां धार्मिक उन्माद में, अन्य धर्मावलंबियों पर आक्रमण करते थे, विजित प्रदेश के निवासियों के सामने दो ही विकल्प होते थे। इस्लाम और दासता। जो इस्लाम ग्रहण कर लेते थे, उनका वे सम्मान करते थे। अन्यों की गुलामी स्वीकार करने के लिये बाध्य कर देते थे अथवा उनकी हत्या कर देते थे। महिलाओं के साथ और भी बर्बरता पूर्ण व्यवहार करते थे। इसका कारण था या तो पुरुष युद्ध में मारे जाते थे। बाकी बचे पुरुष या तो दासता स्वीकार कर लेते थे अथवा प्राण रक्षा के लिये जंगलों में भाग जाते थे। इस अपमान और दुर्गति से बचने का मार्ग ढूंढा गया कि जब भी कहीं आक्रमण होता था तो पुरुष युद्ध के लिये जाते थे। यदि युद्ध में विजयी होते थे तो ठीक है। पराजय की परिस्थितियों में नारियां अग्निकुंड में प्रवेश कर जाती थी। इसलिये सती प्रथा का प्रारंभ हुआ।

इसके साथ ही समाज में लालची/आलसी वर्ग ने अपनी दुर्बलताओं को छिपाने के लिये आक्रांताओं से हाथ मिला लिया और षड़यंत्र के तहत नारियों को शिक्षा से वंचित रखा जाने के लिये। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि एक और नारियों के अज्ञानता के अंधकार में डूबती चली गई।

अज्ञानता के कारण शिक्षा से वंचित होकर आत्मरक्षा करने में असमर्थ थी। इन परिस्थितियों में असहाय नारियों के लिये आश्रय का एकमात्र स्थान आकांताओं के हरम हुआ करते थे। इसका एक प्रमाण महाभारत में भी है। इस प्रथा को पूर्ण मान्यता थी तथा नारियों का सम्मान था। परन्तु षड़यंत्रपूर्वक इस प्रथा को कलंकित करके विधवा विवाह बंद कर दिया गया। समाज में विधवाओं की स्थिति अपमानजनक हो गई और यह स्थिति और भयानक हो गई। अंग्रेजी साम्राज्य के दौरान कलकत्ता और बंबई वेश्यावृत्ति के केन्द्र बन गये। और इस प्रथा को स्वतंत्रता का नाम देकर सम्मानित करने का प्रयास किया गया।

जहां एक ओर सती प्रथा को रोकने के लिये कानून बना। विधवा विवाह जो कि नारियों को सम्मान दिला सकता था। सामाजिक समस्या कहकर छोड़ दिया गया जिसके कारण समाज में नारियों की स्थिति और अधिक भयावह तथा दयनीय हो गई। मुगल शासन में उनको नवाबों तथा सूबेदारों के हरम में स्थान मिलता था। इसी से हरामी शब्द प्रचलन में आया जो कि बेहद अपमानजनक है। **शेष अगले अंक में**

पता - २ डी, WHD हास्टिल सेक्टर, सेक्टर-९, भिलाई ४९०००९

अन्तर्राष्ट्रिय योग प्रतियोगिता पांडिचेरी में योगाचार्य अशोक शास्त्री ने प्रथम स्थान प्राप्त किया

पांडिचेरी। २१वीं अन्तर्राष्ट्रिय योग फेस्टिवल २०१५ का आयोजन दिनांक ४ से ७ जनवरी २०१५ को टूरिज्म विभाग पांडिचेरी राज्य के तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस फेस्टिवल में अन्तर्राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता भी आयोजित किया गया, जिसमें छत्तीसगढ़ से योगाचार्य अशोक कुमार शास्त्री ने प्रथम स्थान प्राप्त कर छत्तीसगढ़ को गौरवान्वित किया है। इस प्रतियोगिता में देश-विदेश सहित लगभग ३९ देशों के प्रतिभागी शामिल हुये। इस उपलब्धि के लिए छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर अशेष शुभकामनायें।

thearyasamaj.org

विचारात्मक यज्ञोपवीत के तीन धागों का महत्व

- खुशहालचन्द्र आर्य

यज्ञोपवीत के तीन धागे, मनुष्य के ऊपर जो तीन ऋण है, उनसे उऋर्ण होने का संकेत करते हैं। यह धागे मनुष्य को याद दिलाते हैं कि तुम्हारे ऊपर जो तीन ऋण है, उनसे उऋर्ण होना तुम्हारा पावन कर्त्तव्य है, जिसका मनुष्य को पालन करना चाहिए। वे तीन ऋण इसी भांति है :-

(१) ऋषि ऋण :- ऋषि ऋण का तात्पर्य यह है कि हमारे ऋषि मुनियों ने बड़े परिश्रम और अपना पूरा जीवन स्वाध्याय में लगाकर, ईश्वर प्रदत्त वेद ज्ञान का गहन अध्ययन करके उनके सही अर्थों के आधार पर उपवेद, उपनिषद, दर्शन, ब्राह्मण-ग्रन्थ व स्मृतियां आदि लिखकर हमकों पढ़ने के लिए सामग्री दे दी है, उसको पढ़कर हम अपने जीवन को उन्नत व पवित्र बनाकर मोक्ष-मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं, हम लाभ के लिए जो हमारे ऊपर ऋषि मुनियों ने उपकार किया है, उस ऋण से उऋण होने के लिए या उनके परिश्रम व स्वाध्याय को सपल बनाने के लिए एक ही मार्ग है, वह है हम उनके लिखे ग्रन्थों का स्वाध्याय नित्य करें और अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन को उन्नत बनाए। तभी हम उनके ऋण से उऋण हो सकेंगे। जैसे एक पिता अपना पूरा जीवन लगाकर जो धन-संग्रह करता है, वह अपने पुत्रों को दे देता है, तब उन पुत्रों का यह कर्त्तव्य है कि उस धन की वृद्धि करे और परपकोर के कार्यों में लगावें। इसी प्रकार हम भी ऋषि ऋण से तभी मुक्त होंगे जब उनके ग्रन्थों का स्वाध्याय करके अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन को सफल व सुखी बनावें और उन्हीं ग्रन्थों के अनुसार और ग्रन्थ लिखकर आने वाली सन्तानों को और अधिक सामग्री देवें। यज्ञोपवीत का एक धागा इसी ऋण से मुक्त होने का सन्देश देता है।

(२) देव ऋण :- यह दो किस्म का होता है (१) पांच जड़ देवता जिनमें पृथ्वी, जल, हव, अग्नि व आकाश है। यह पांचों देवता हमारी पांचों ज्ञानेन्द्रियों, आँख, नाक, कान, जिव्हाव, त्वचा इनको अपने प्रभाव से प्रभावित करके इनको ज्ञान यानि चेतना देकर कार्यों में प्रवृत्त करते हैं। अग्नि हमारी आंखों को रुप देखने की शक्ति देती है। आकाश शब्द के रुप में कानों को सुनने की शक्ति देता है। पृथ्वी गन्ध के रुप में नाक को सूंघने की शक्ति देती है। हवा स्पर्श के रुप में अनुभव करने की शक्ति देती है। इसी प्रकार जिव्हा के रस के रुप में पानी स्वाद लेने का अनुभव करवाता है। इन उपकारों के लिए हम इन जड़ देवातओं को यज्ञ द्वारा सन्तुष्ट व प्रसन्न करते हैं। यहां यह लिखना बहुत आवश्यक है कि जिस प्रकार शरीर सब अंगों को खुराक व शक्ति पहुंचाने के लिए हम मुख से भोजन करते हैं। मुख से किया हुआ भोजन पेट में जाकर उसका खून व रस बनाता है। उस खून व रस को हमारी शरीर के नशे (धमनियां) पूरे शरीर में जाकर प्रत्येक अंगों में शक्ति देती है। इसी से उनमें कार्य करने की क्षमता आती है। इसी प्रकार अग्नि सब जड़ देवतों का मुख है। यज्ञ द्वारा दिया हुआ घी तथा सामग्री अग्नि में जलकर उसकी सुगन्ध हजार गुणा तेज होकर प्रकृति के बारी बीर से चारों देवताओं के पास पहुंचा देती है यानि पूरी प्रकृति में जो प्राणियों द्वारा किये गये श्वांस, टट्टी, पेशाब व पसीना आदि से जो दुर्गन्ध होती है वह यज्ञ द्वारा सुगन्धित हो जाती है और पूरा वातावरण अपने शरीर से बाहर जाने वाली वस्तुओं से गन्दा करते हैं, उतना ही वातावरण को यज्ञ द्वारा सुगन्धित करे जिससे पूरा वातावरण सदैव ही पवित्र बना रहे। इसी लिए वेद भी **'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'** कह कर यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कार्य बताया है। स्वर्गकामो यजेत स्वर्ग की कामना करने वालों को यज्ञ करना चाहिए।

दूसरा देव है, देवों का देव महादेव यानि ईश्वर है। ईश्वर ने प्राणी मात्र पर विशेषकर मनुष्य के ऊपर बड़े उपकार किये हैं। ईश्वर ने मनुष्य के लिए सुन्दर सृष्टि की रचना करके मनुष्य के उपयोग, सहयोग व उपभोग के लिए जल, वायु, अग्नि, फल-फूल, पशु-पक्षी आदि निःशुल्क देकर बड़ा उपकार किया है। इन्हीं के सहयोग से मनुष्य अपने जीवन को सुन्दर ढंग से चलाते हुए अपना तथा दूसरों का जीवन सुखी

thearyasamaj.org

बनाते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर होता है जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। ईश्वर के इस निःस्वार्थ उपकार के लिए हम सन्ध्या करते हैं। सन्ध्या में हम ईश्वर के गुणों का गुण-गान करते हैं और उसके गुण, दया, करुणा, परोपकार, सहृदयता, सहयोग आदि गुणों को अपने जीवन में धारण करते हैं जिससे हमारा जीवन उत्तम और श्रेष्ठ बनता है और हम मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी बनते हैं। इन उपकारों के ऋण से हम सन्ध्या द्वारा उऋण होते हैं। इसीलिए दिन में दो बार प्रातः व सायं सन्ध्या करना हमारे ऋषि-मुनियों ने बताया है, जिसे सब मनुष्यों को करनी चाहिए।

३. पितृ ऋण :- माता-पिता तथा वृद्ध जनों के हमारे ऊपर बहुत उपकार होते हैं। माता हमकों नौ महीने पेट में रखती है, फिर बालकपन में हमारा पालन करती है। हमें चलना-बोलना सिखाती है। पिता अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा दिलाता है फिर उसका विवाह करके कमाने के योग्य बनाता है और अपना कमाया हुआ धन बच्चों को दे देता है। वृद्ध जनों का अनुभव और उनका आशीर्वाद हमारा बहुत सहोयगी बनता है। इस प्रकार माता-पिता व वृद्धजनों का उपकार हमारे पूरे जीवन को सुखी व समृद्धशाली बनाने में अति सहयोगी रहता है, इसीलिए हमें उनकी सेवा व सुश्रुषा पूरी श्रद्धा के साथ करनी चाहिए जिससे हम उनके ऋण से कुछ अंशों में उऋण हो सके। इस प्रकार यज्ञोपवीत तथा तीसरा धागा हमें माता-पिता एवं वृद्धजनों की सेवा व सुश्रुषा करने का आदेश देता है। हमें यहां यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि सेवा और सुश्रुषा क्या होती है। सेवा को तो सभी जानते हैं।

माता-पिता की खाने-पीने, रहने-सहने आदि की सुन्दर व्यवस्था करना उनको हर किस्म से प्रसन्न रखते हुए उनकी आज्ञाका पालन सेवा कहलाती है। सुश्रुषा का तात्पर्य है उनकी बात को आदरपूर्वक सुनना यानि उनकी बातों या उनकी इच्छाओं की अवहेलना न करना। उनसे हर काम पूछ कर करना और उनके महत्व को बनाए रखना उनकी सुश्रुषा करना है। आज कल माता-पिता व वृद्धजनों की सेवा तो कुछ अंश में हो जाती है। परन्तु सुश्रुषा का अभाव बना रहता है इसलिए सुश्रुषा पर भी बच्चों को पूरा ध्यान रखना चाहिए।

एक बात यह भी जानने योग्य है कि हमारे पौराणिक भाई छः धागों की यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनते हैं। उनका मानना है कि स्त्रियों को यज्ञोपवीत नहीं पहनना चाहिए, कारण ये चार दिन अपवित्र रहती हैं। परन्तु यह स्वार्थी पंडितों का डाला अन्ध विश्वास है कारण अपवित्र तो मनुष्य भी ट्टी जाते वक्त तथा पेशाब करते वक्त रहता है इसलिए जब पुरुष जनेऊ पहनता है तो स्त्रियां भी जनेऊ पहने ते कोई आपत्ति नहीं। स्त्रियों को यज्ञोपवीत न पहनने देना यानि उन तीनों ऋणों से वंचित रखना, यह नारी जाति के ऊपर अन्याय करना है। क्या स्त्रियां अपने माता-पिता, सास-ससुर की सेवा व सुश्रषा नहीं कर सकती ? इतना ही क्यों मध्यकाल में तो इन स्वार्थी पंडितो ने तो स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने व सुनने का अधिकार भी छीन लिया। यह तो देव दयानन्द का बहुत बड़ा उपकार है कि उन्होंने स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने व सुनने का अधिकार दिलाया। इसलिए ऋषि ने आर्यसमाज के दस नियमों में तीसरा नियम यह भी बताया कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। अब हमें यह अंध विश्वास हटाना है कि स्त्रियों को यज्ञोपवीत नहीं करना चाहिए, ताकि स्त्रियां भी यज्ञोपवीत धारण करके तीनों ऋणों का पालन कर सकें जो ऋषि के बताने से वेदानुकूल है।

पता : गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७०००७

सगुणोपासना

जिसको सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, शुद्ध, नित्य, आनन्द, सर्वव्यापक, एक, सनातन, सर्वकर्ता, सर्वाधार, सर्वस्वामी, सर्वनियन्ता, सर्वान्तर्यामी, मंगलमय, सर्वानन्दप्रद, सर्वपिता, सब जगत् का रचने वाला, न्यायकारी, दयालु आदि सत्य गुणों से युक्त जान के जो ईश्वर की उपासना करना है, सो 'सगुमोपासना' कहाती है।

thearyasamaj.org

दयानन्द का सपना कौन पूरा करेगा

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर चिन्तनीय संदेश

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक

संगच्छध्वं, संवदध्वं इसका एक अन्य व्यावहारिक अभिप्राय यह भी है कि जो भी कार्य हो, वह सर्वेषा अविरोधेन हो। किसी का भी विरोध न हो। याने देश के सभी सम्प्रदायों का एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम बने और देश उसके मुताबिक आगे बढ़े। दुनिया को आगे बढ़ाने में भी यही गुर लागू किया जाए। इसका अर्थ यह नहीं कि लोगों, सम्प्रदायों और राष्ट्रों के बीच मतभेद बिलकुल न होंगे। यह अस्वाभाविक है। मतभेद जरुर होंगे। वे बने रहें लेकिन वे आपसी मानवीय सम्बन्धों में रोड़े न बनें और सर्वसम्मत विराट् कार्यक्रम को ठप्प न करें। इस बात को यों भी कह सकते हैं कि विचार की पूर्ण स्वतन्त्रता और कर्म की पूर्ण मर्यादा याने व्यक्ति, परिवार, राष्ट्र और विश्व को आगे बढ़ाने का यह नया गुर बनें।

जन्म दिवस मनाने की यह परम्परा महर्षि जी के बाद भी कुछ वर्षों तक चली लेकिन फिर बन्द हो गई। अब इस परम्परा को पुनर्जीवित करने का सही समय है। स्वामी अग्निवेश जी को धन्यवाद कि उन्होने आर्यसमाज के मंच पर ईसाई इस्लामी और सिख विद्वानों को आमंत्रित किया और उनसे महर्षि दयानन्द पर अपने विचार प्रकट करने के लिए कहा। जिन मतों का स्वामी दयानन्द ने दो टूक खण्डन किया तथा जिनके और आर्यसमाज के बीच गलतफहमी के कारण तलवारें खिंची रही, उन मतों के प्रतिनिधियों का एक मंच पर उपस्थित होना अपने आप में अजूबा है। इस मंच पर ये खण्डन-मण्डन के लिए इकट्ठे नहीं हुए हैं। खण्डन-मण्डन का जमाना लद गया है। न तो आम लोगों की इसमें दिलचस्पी है और न ही अब इस तरह के विद्वान हैं, जो विभिन्न धर्मों के विशेषज्ञ हों और जिनकी कर्कश शास्त्रार्थों में कोई आस्था हो। इसीलिए आज के तीनों व्याख्यानों में हम समरसता की धारा को लगातार बढ़ता हुआ देखते रहे। इन व्याख्यानों से पता चलता है कि महर्षि दयानन्द के बारे में अन्य मतावलम्बियों के विचार हैं। तीनों विद्वानों ने महर्षि के योगदान की सराहना की है लेकिन हमें यह भी पता है कि इन सम्प्रदायों में ऐसे अनेक महत्वपूर्ण लोग हैं जो महर्षि के बारें में कुछ दूसरा ही विचार रखते हैं। उनकी राय है कि स्वामी दयानन्द हिन्दू साम्प्रदायिकता के आदि प्रवक्ता थे और उन्होंने ही भारत में इस्लाम और ईसायत की जड़ खोदी है। वे मुसलमानों और ईसाईयों के विरुद्ध थे।

यह दृष्टिकोण पूर्णतया निराधार है। यदि दयानन्द हिन्दू साम्प्रदायिकता के पक्षधर होते तो वे हिन्दू समाज में सुधार की बात कभी नहीं करते। यह सारी दुनिया में देखा जाता है कि साम्प्रदायिकता के पक्षधर केवल अपने सम्प्रदाय की मजबूती पर ध्यान देते है किसी अन्य पहलू पर ध्यान देंगे तो उनका सम्प्रदाय कमजोर पड़ जाएगा संगठन ढीला पड़ जाएगा, अन्य सम्प्रदायों के मुकाबले उनका रुतबा हट जाएगा। वे मूलतः यथास्थितिवादी होते हैं। वे केवल परम्पराओं पर जोर देते हैं। सुधार की कोई बात नहीं करते। दूसरे सम्प्रदायों पर आक्रमण करना वे अपना कर्त्तव्य समझते हैं लेकिन अपने सम्प्रदाय पर वे उंगली उठाने को भी तैयार नहीं होते। वे हमेशा एक दुश्मन की तलाश में रहते हैं। दुश्मन के बिना वे जिंदा नहीं रह सकते। इसीलिए वैमनस्य और घृणा उनके सबसे बड़े हथियार होते हैं। अपने अनुयायियों और दुनिया को देने के लिए उनके पास कुछ नहीं होता। वैचारिक दृष्टि से वे ठन-ठन गोपाल होते हैं।

thearyasamaj.org

दयानन्द इसके परम पूर्ण प्रतिलोम थे। उन्होने सत्यार्थ प्रकाश में चौदह समुल्लास लिखे । चौदह में से ग्यारह समुल्लासों में उन्होंने किसकी खबर ली ? अपने सम्प्रदायों की अपने धर्म की तथाकथित हिन्दू धर्म की कौन सी ऐसी पोंगापंथी मान्यता है, जिस पर दयानन्द ने अपने तर्क-तीर नहीं बरसाए हों ? ईश्वर की अवधारणा, उपासनापद्धति, भक्षाभक्ष्य, विवाह, जन्मना जाति, पुरोहिताई, पाखण्ड, विदेशी राज्य, शोषणकारी, अर्थ-व्यवस्था आदि शायद ही कोई ऐसा पहलू छूटा हो, जिस पर दयानन्द ने आग न बरसाई हो यह आग पूरे ग्यारह समुल्लासों में बरसती रही।

१७ मई २००४ को नई दिल्ली के ऐतिहासिक कांस्टीट्यूशन क्लब में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश जी द्वारा अनेक सम्प्रदायों के विद्वानों की एक विशेष संगोष्ठी आयोजित की गई थी । कार्यक्रम लगभग अंग्रेजी माध्यम से हुआ और अध्यक्षता की सुप्रसिद्ध वैदिक विदुषी डॉ. कपिला वात्सायन ने तथा सह अध्यक्षा की सुप्रसिद्ध लेखक पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने। इसके प्रमुख वक्ता थे जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय के विद्वान कुलपति डॉ. सिराज हुसैन, आई.ए.एस. दिल्ली अल्पसंख्यक आयोज के सदस्य एवं ईसाइयत के सुप्रसिद्ध प्रवक्ता रेवेरण्ड वाल्सन थपू तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में पंजाबी विभाग के अध्यक्ष सिख साहित्यकार प्रो. सत्येन्द्र सिंह नूर । संचालन किया लाला दीवान चन्द ट्रस्ट के श्री विश्वनाथ जी (राजपाल एण्ड संस के मालिक) तथा धर्म प्रतिष्ठान की ओर से स्वामी अग्निवेश। सभी व्याख्यानों की पूरी पुस्तक प्रकाशधीन है । पर बानगी के लिए पेश है- डॉ. वैदिक का प्रेरणादायक सहअध्यक्षीय भाषण ।

समुल्लासों में दयानन्द का अद्वितीय पांडित्य विलक्षण शौर्य और अडिग आत्म विश्वास सूर्य की तरह चमकता है । शेष तीन समुल्लासों में उन्होने सम्प्रदायों की समीक्षा की है ११ में खुद की और ३ में दूसरों की ऐसे व्यक्ति को कोई पक्षपाती कैसे मान सकता है ? स्वयं स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखा है कि इस ग्रन्थ के द्वारा सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करें । यह ग्रन्थ उन्होंने मनुष्य मात्र के लाभ और मनुष्य जाति की उन्नति के लिए लिखा है। स्वामी जी ने यह कही नहीं लिखा कि यह ग्रन्थ केवल आर्यसमाजियों या हिन्दुओं की उन्नति के लिए लिखा है। जिसे मनुष्य मात्र की चिन्ता है, यह किसी सम्प्रदाय-विशेष जाति-विशेष, राष्ट्र विशेष, धर्म-विशेष आदि पक्षधर हो ही नहीं सकता। इसी भूमिका में स्वामी जी ने आगे लिखा है कि यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ हूं और बसता हूं तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ या मतवालों के साथ वर्त्तता हूँ।

स्वामी जी के इस सदाशय को ज्यादातर लोक ठीक से समझ नहीं पाए। स्वयं स्वामी जी को इसका अग्रबोध था । उन्होंने अनेक स्थानों पर लिखा है कि दुराग्रही, विद्वेषी, मंदबुद्धि, सांप्रदायिक लोक उनके मंतत्व को गलत समझेंगे और नाराज होंगे लेकिन निष्पक्ष और बुद्धिमान लोग उनसे सहमत होंगे। स्वामीजी से लोग सचमुच नाराज हुए, वरना उन्हें जहर देने, उन पर सांप छोड़ने और उन्हें शीशा पीसकर खिलाने की कोशिश क्यों नहीं की जाती ? मानव जाति के इतिहास में सुकरात और दयानन्द को एक साथ क्यों याद किया जाता है ? इसीलिए कि दोनों ने अपनी सत्यनिष्ठा और निर्भीकता का सर्वोच्च मूल्य चुकाया। महर्षि दयानन्द के प्रति एक जबर्दस्त अन्याय यह भी हुआ कि उनके भक्त भी उनके निन्दकों के प्रवाह में बह गए। भक्तों ने स्वामीजी को उसी आँख से देखना शुरु कर दिया, जिससे निन्दक उन्हें देखने लगे थे । अर्थात् स्वामी जी के भक्त यह भूल गए कि दयानन्द किसी सम्प्रदाय विशेष के प्रवक्ता नहीं थे और न ही वे किन्हीं खास सम्प्रदायों के निन्दक थे। वे सत्य के प्रेमी थे। सत्य के ग्राहक थे । उनकी सत्य की छुरी इतनी तेज थी कि उस पर असत्य का जो भी खरबूजा पड़े वह कटे बिना नहीं रहता था। उन्होने बाईबिल और कुरान पर वार किए तो क्या पुराण बच गए? उन्होंने तो वेद को भी नहीं बख्शा। हम अपने वेदों को सायण, महीधर, उवट, मैक्समूलर आदि के भाष्यों के जरिए जानते थे। हमारे लिए तो ये ही वेद थे। दयानन्द ने

thearyasamaj.org

इन वेदों को उठाकर कूड़े में फेंक दिया। उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका लिखी और दुनिया को बताया कि सच्चा वेद क्या है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है यह पहली बार दयानन्द ने ही बताया।

जिस दयानन्द ने भला, वेदों, उपनिषदों, गीता और पुराणों की सफाई कर दी, यह जैन, बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम, सिख आदि मतों को अन्छुआ कैसे रहने देते? उन्होंने सभी धर्मग्रन्थों की निर्मम और निर्भीक आलोचना की लेकिन आलोचना उनका अंतिम लक्ष्य नहीं था। वह केवल एक पड़ाव था। दयानन्द के भक्त और निन्दक दोनों ही इस पड़ाव पर पहुंचकर अटक गए।

अब इस पड़ाव से आगे बढ़ने का समय है। आज का आयोजन इस दिशा में पहला कदम है। स्वयं महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखा है हम जरा उस पर ध्यान दें। स्वामी जी के शब्दों में - यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में है। वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक-दूसरे के विरुद्ध बातें है उनका त्यागकर परस्पर प्रीति से वर्त्ते-वर्त्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे।

स्वामीजी का यह कथन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसका अभिप्राय क्या है ? क्या यह नहीं कि खण्डन-मण्डन के बाद जो भी बातें सबके अनुकूल हों यानी सबको पसंद हो यानी सर्वसम्मत हो, उन-उन बातों पर सबका पर एका हो जाए और सब एकसाथ चल पड़ें। संगच्छध्वं संवदध्वं इसका एक अन्य व्यवहारिक अभिप्राय यह भी है कि जो भी कार्य हो, सर्वेषा अविरोधन हो। किसी का भी विरोध न हो। याने देश के सभी सम्प्रदायों का एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम बने और देश उसके मुताबिक आगे बढ़े। दुनिया को आगे बढ़ाने में भी गुर लागू किया जए। इसका अर्थ यह नहीं कि लोगों, सम्प्रदायों और राष्ट्रों के बीच मतभेद बिलकुल न होंगे। यह अस्वाभाविक है। मतभेद जरुर होंगे। वे बने रहें लेकिन वे आपसी मानवीय सम्बन्धों में रोड़े न बनें और सर्वसम्मत विराट् कार्यक्रम को ठप्प न करें। इस बात को यों भी कह सकते हैं कि विचार की पूर्ण स्वतन्त्रता और कर्म की पूर्ण मर्यादा याने व्यक्ति, परिवार, राष्ट्र और विश्व को आगे बढ़ने का यह नया गुर बनें। इस गुर के कई आयाम होंगे। पहला तो यही कि विभिन्न विचार-पद्धतियां और जीवन-पद्धतियां के बीच सतत सम्वाद चलता रहे जैसा कि आज हो रहा है। सम्वादहीनता ही भय और वैमनस्य का मूल कारण है। गलतफहमियां ही दुश्मनी की जन्मदाता है। यदि आपस में बातचीत और सम्पर्क हो तो गलतफहमियां अपने आप दूर होती चली जाएंगी। दूसरा आयामं यह है कि दूसरे की मूल मान्यताओं के प्रति सहनशीलता का भाव हो जिन मान्यताओं को आप अपने लिए अनुचित मानते हैं लेकिन दूसरा जिन्हें अपने अस्तित्व की अनिवार्य शर्त मानता हो तो क्या आप उन्हें सहन भी नहीं कर सकते ? आप उन्हें न मानें आदर न दे सकें तो न दें लेकिन उन्हें सहन तो कर ही सकते हैं। सहन करते हुए यदि आप अपनी असहमति जताएंगे तो शायद आपकी बात ज्यादा, प्रभावशाली होंगी। कोई आश्चर्य नहीं कि सामनेवाला आपका रास्ता ही पकड़ ले। अगर ऐसा न भी हो तो भी कम से कम सौंमनस्य तो बना रहेगा। तीसरा आयाम यह है कि विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों पंथों में सामान्य तत्वों की खोज हो। यदि ईश्वर एक है हर मनुष्य का लक्ष्य एक है तो अलग-अलग मोतियों के बीच उस एक सूत्र को खोजने का काम अवश्य किया जाना चाहिए जो सबको जोड़ता है। यह पण्डितों का काम है लेकिन वह उत्कृष्ट भक्ति-भाव के बिना सम्भव नहीं है। यह कोरी पंडिताई नहीं है। ईश्वर-प्रेम और मनुष्य प्रेम में डूबा हुआ सच्चा भक्त ही यह कार्य कर सकता है। दयानन्द को दुनिया का प्रकाण्ड पंडित के तौर पर ही जानती है। उसे पता नहीं कि वे कितने महान भक्त भी थे। अपने पांडित्य-प्रकाश के लिए उन्हें मुश्किल से दस साल ही मिले। वे जल्दी चले गए। अगर महावीर और गौतम बुद्ध की तरह उन्हें १५-२० साल और मिल जाते तो इसी आर्यसमाज को वे ऐसा सार्वदेशिक सूत्र बना देते जो सारी मनुष्य जाति को बांध लेता और दुनिया की संकीर्णता को घटाने में जबर्दस्त भूमिका निभाता। दयानन्द का यह कार्य अभी अधूरा है। दयानन्द के प्रेमियों के लिए यह चुनौती है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का सपना आखिर कौन पूरा करेगा ?

thearyasamaj.org

सभी प्रकार के दु:खों का निवारण का उपाय 'योग दर्शन'

दार्शनिक

ले. कृपाल सिंह वर्मा

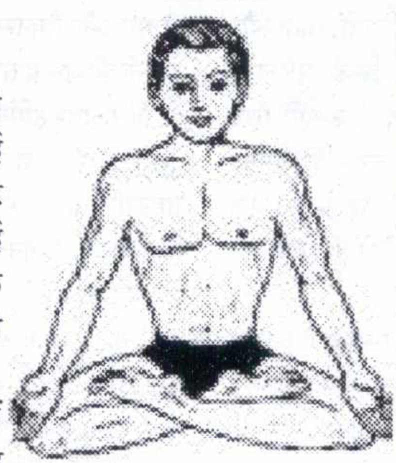

वेद में ऋषि कहता है -

'त्वमेव विदित्योतिमृत्युमेति,
न अन्य पंथा विद्यते अयनाय' ।

हे परमपिता परमेश्वर आपको जानकर ही, आको प्राप्त करके ही कोई मनुष्य सब प्रकार के दुखों का उपाय कर सकता है । इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है । परमात्मा को प्राप्त करके सभी प्रकार के दुःखों को नष्ट करना यही योग दर्शन का विषय है ।

योग दर्शन को चार भागों में विभक्त किया गया है- **(१) समाधिपाद** :- इससे योग के स्वरुप का वर्णन किया गया है । **(२) साधनपाद** : इसमें योग प्राप्ति के साधनों का वर्णन किया गया है । **(३) विभूतिपाद** :- इसमें योग से प्राप्त विभिन्न प्रकार की सिद्धियों का वर्णन किया गया है। **(४) कैवल्यपाद** :- इसमें परमसुख मोक्ष प्राप्ति का उपाय बताया गया है।

समाधिपाद का दूसरा सूत्र है :-

'योगश्चित वृत्ति निरोधः' ॥२॥

चिन्तवृत्तियों के निरोध को योग करते हैं।

तीसरे सूत्र में योग के फल का वर्णन किया गया है।

'तदा द्दष्टाःस्वरुपेअवस्थानम्' ॥३॥

जब चित्त की वृत्तियों का निरोध हो जाता है तो जीवात्मा की परमात्मा के आनन्दमय स्वरुप में स्थिति हो जाती है। उस समय आत्मा में परमात्मा के ज्ञान का प्रकाश होता है।

वृत्तयः पन्चतयः क्लिष्टाइक्लिष्टाः ॥५॥

वृत्तियां दुख देने वाली तथा दुख का नाश करने वाली पांच प्रकार की होती है। वे प्रकार ये हैं :-

(१) प्रमाण वृत्ति :- प्रमाणों द्वारा ज्ञान प्राप्त करने की वृत्ति। इसमें तीन भाग है :- (१) प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा ज्ञान प्राप्त करना। (२) अनुमान प्रमाण द्वारा ज्ञान प्राप्त करना। (३) आगम अर्थात् शब्द प्रमाण द्वारा ज्ञान प्राप्त करना।

(२) विपर्य वृत्ति :- विपरीत ज्ञान प्राप्त करने की वृत्ति।

(३) विकल्प वृत्ति :- कल्पना करने की वृत्ति।

(४) निद्रा :- सो जाने की वृत्ति। सो जाने पर मन प्राणों में स्थिर हो जाता है . ये अज्ञान की अवस्था है आत्मा को कोई ज्ञान नहीं रहता।

(५) स्मृत्ति वृत्ति :- चित्त में स्थित किसी बात को न भूल पाना। उपरोक्त वृत्तियों के निरुद्ध की अवस्था प्राप्त करना ही योग है। यह अभ्यास तथा वैराग्य से होती है।

(२) साधनपाद :- इस पाद में महर्षि पतञ्जलि ने योग की अवस्था को प्राप्त करने के साधनों का वर्णन किया है। इसी में ही योग के आठ अंगों का वर्णन है। योग के आठ अंग निम्नलिखित है :-

(अ) अहिंसा - अहिंसा का अर्थ है बैरत्याग। यह किसी के अन्दर बैर भावना विद्यमान है तो वह किसी भी प्रकार योग में प्रवेश नहीं कर सकता। उसका मन परमात्मा में नहीं लग सकता।

(ब) सत्य - सत्याचरण से मन पवित्र होता है। पवित्र मन से ही योग में प्रवेश कर सकता है।

(स) आस्तेय - चोरी त्याग को कहते हैं। यदि कोई अन्याय से दूसरे के धन को प्राप्त करता है तो उसका योग में मन नहीं लग सकता।

(द) ब्रह्मचर्य - शरीर की रक्षा को कहते हैं। जिसका मन तथा शरीर स्वस्थ है, वही योग कर सकता है।

(इ) अपरिग्रह - धन एकत्रित करना जिसके जीवन का उद्देश्य है ऐसे व्यक्ति के पास योग करने में लिए समय नहीं होता।

thearyasamaj.org

योग का दूसरा साधन है नियम । नियम भी पांच है :-

(अ) शौच :- पवित्रता को कहते हैं । शरीर, मन तथा बुद्धि जिसके पवित्र है वही योग में प्रवेश करता है । इसलिए जल से शरीर को, सत्याचरण से मन को, ज्ञान से बुद्धि को, तथा सत्कर्मों से जीवात्मा को पवित्र करना चाहिए ।

(ब) सन्तोष :- पूर्ण पुरुषार्थ करने पर जो मिल जाय उसी को सन्तुष्ट रहना चाहिए अन्यथा योग में प्रवेश नहीं हो सकता।

(स) तप :- कर्त्तव्य के करने में कष्ट उठाना । कर्त्तव्य का त्याग करके कोई भी योगी नहीं हो सकता ।

(द) स्वाध्याय :- आध्यात्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना। परमात्मा के स्वरुप को जानना । ज्ञान के बिना ध्यान नहीं होता ।

(इ) ईश्वर प्रणिधान :- परमात्मा की भक्ति करना, प्रेम करना। परमात्मा जिसे ग्रहण करता है वही योगी बनता है ।

यम तथा नियमों के द्वारा मन में रोग का बीज बोया जाता है । बिना यम, नियम के कोई भी योगी नहीं बन सकता। अब तो आसनों को ही योग कहते है ।

योग का तीसरा साधन आसन है :- जो सुखपूर्वक लग सके, जो स्थिर है वही आसन है । इसी में ध्यान की अवस्था संभव है ।

योग का चौथा साधन है प्राणायाम :- प्राणायामपूर्वक की गयी उपासना सबसे अधिक बलवान होती है तथा शीघ्र फलदायक होती है ।

योग का पांचवा साधन है प्रत्याहार :- मन तथा इन्द्रियों का अन्तर्मुखी होना प्रत्याहार है । जब व्यक्ति आध्यात्मिक चिन्तन में प्रवृत्त होता है ।

योग का छठा अंग है धारणा :- जब योगी किसी श्रेष्ठ उद्देस्य को मन में धारण कर लेता है तो धारण के अनुसार ही ध्यान करता है । उस ध्यान से योगी के मन में संबंधित ज्ञान का प्रकाश होता है ।

योग का सातवां अंग है ध्यान :- जब योगी किसी उद्देश्य को मन में धारण कर परमात्मा का ध्यान करता है तो उद्देश्य से संबंधित ज्ञान योगी के मन में प्रकट होता तब वह किसी लौकिक सिद्धि अथवा परम सिद्ध केवल्य को प्राप्त करता है।

योग का आठवां अंग है समाधि :- समाधि वह अवस्था है जब योगी अपने ध्यान में इतना तल्लीन हो जाता है कि अपने को भूल जाता है । परमात्मा के आनन्द में मग्न हो जाता है । विभूतिपाद में लौकिक सिद्धियों का वर्णन है तथा कैवल्यपाद में परम आनन्दमय अवस्था मोक्ष का वर्णन है । योग दर्शन विश्व का सबसे अच्छा मनोविज्ञान है । यह हमें परमात्मा को साक्षात दर्शन करा सभी दुखों का नाश करता है ।

पता :- २५३, शिवलोक, कंकरखेड़ा, मेरठ (उ.प्र.)

"मुश्किल है"

जिस देश में गंगा-दर्शन से, पाप सभी धुल जाते हैं ।
उस देश में बढ़ते अपराधों पर, रोक लगाना मुश्किल है।
जहां हजारों मत-पन्थों की, थोक दुकानें चलती हों ।
वहां एकता के गीतों पर, ढोल बजाना मुश्किल है ।
जहां हाथों की रेखायें ही, किस्मत के फैसले करती हों ।
वहां कर्मशीलता पौरूष का, पाठ पढ़ाना मुश्किल है ।
जहां सोमनाथ का महादेव खुद, नेत्र तीसरा खोलता हो ।
वहां आक्रमणकारी दुष्टों को, सबक सिखाना मुश्किल है।
जिस देश में ईश्वर ग्वाला बनकर, गोपी के संग रास करे ।
वहां चरित्र की उज्ज्वलता के, दर्शन पाना मुश्किल है ।
जहां सात दिवसीय भागवत से, मोक्षद्वार खुल जाता हो ।
वहां वेदों के अध्ययन का, शौक जगाना मुश्किल है ।
साधारण जन बन कर ईश्वर, जिस देश में पूजे जाते हों ।
उस देश में सच्चे ईश्वर का, स्वरुप बताना मुश्किल है ।
जिस देश में त्यागी संन्यासी, धन के ढेरों पर सोते हैं ।
उस देश में भोले-भक्तों को, सन्मार्ग दिखाना मुश्किल है।
जिस देश में नेता अधिकारी, ईश्वर बेचकर खाते हों ।
दुनिया के नक्शे पर उसकी, पहचान बनाना मुश्किल है ।

- अंकुर अरोड़ा, १५/२१, आदर्शनगर,
रोहतक-१२४००१

thearyasamaj.org

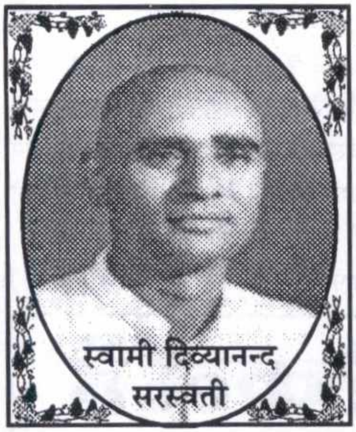

प्रेरक जीवन

६ फरवरी पुण्य तिथि

छत्तीसगढ़ में वेद की दुन्दुभी बजाने वाले

"स्वामी दिव्यानन्द"

आचार्य तरुण शास्त्री,
डी.ए.वी. मोनेट पब्लिक स्कूल, रायपुर

'नीतिवान निन्दा करें या स्तुति, धन प्राप्ति हो या नहीं, आज मृत्यु हो या युगों बाद इन बातों की चिन्ता किए बिना धीर पुरुष न्याय के मार्ग से कभी विचलित नहीं हुआ करते। अर्थात् धैर्यशील धीर पुरुष न्याय के मार्ग अवलम्बन करके उससे कभी भी नहीं हटा करते।'

मैं सादर प्रणाम करता हूँ उस वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य दिव्य गुणों से सुभूषित पूज्य स्व. स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी को, जिनकी दिव्य दृष्टि ने छत्तीसगढ़ के सुदूर वनवासी अंचल सरगुजा (अम्बिकापुर) दण्डकारण्य (बस्तर) जैसे पिछड़े क्षेत्रों में व्याप्त अशिक्षा, गरीबी, भूखमरी से पीड़ित वनवासियों की दयनीय दशा को देखा। गरीबी, और भूखमरीके कारण गाँव के लोग किस प्रकार अपने धर्म कोछोड़कर विदेशी ईसाई मिशनरियों के अनुयायी बनते जा रहे हैं इस पूरे घटनाचक्र को निकट से देखा और महसूस किया। विदेशी मिशनरियों की जड़े वनवासियों के चूल्हे चौके तक पहुंच चुकी थी। उनकी सेवा, सहयोग व चिकित्सा से वनवासी प्रभावित थे, लेकिन सेवा की आड़ में धर्मान्तरण के प्रखर विरोधी थे। राष्ट्र भक्त स्वामी दिव्यानन्द जी ने वैदिक संस्कृति भारतीय सभ्यता राष्ट्रभक्ति की महत्ता का प्रचार करके विदेशियों की चाल से कुछ समझदार वनवासियों को अपना बना लिया। स्वामी जी उन्हीं में घुल-मिल गये। एक संस्मरण बहुधा सुनाया करते थे कि एक बार बिहार से लगे रामानुजगंज क्षेत्र में एक रात्रि अचानक एक वनवासी शिक्षक के घर पर ठहरना पड़ा। उस शिक्षक के दो छोटे बच्चे थे रात्रि चर्चा में मालूम पड़ा कि वे ईसाई है। भोजन में बासी परोसी गई। जिस बर्तन में स्वामी खा रहे थे उसी में उक्त शिक्षक के बच्चे भी साथ खाने लगे। यहाँ हिन्दू दरवेश की परीक्षा थी परिणामतः पूर्ववत् निर्विकल्प भाव से बासी खाते रहे प्रातः जब विदा होने लगे तो वह वनवासी शिक्षक भाव विभोर हो चरणों में गिर पड़ा। कहने लगा हिन्दुओं में भी उदार सहृदय साधु हैं ये मुझे मालूम न था। आज से मैं पुनः अपने पूर्वजों के मान्य हिन्दू वैदिक धर्म को अंगीकार करना चाहता हूँ आप मुझे दीक्षा दें। शुद्धि संस्कार द्वारा उस परिवार को हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया। आगे चलकर वह पट्ट शिष्य हो गया। स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज का छत्तीसगढ़ आगमन भिलाई के गायत्री महायज्ञ के अवसर पर लगभग १९६० ई. में हुआ। लगभग ३५ वर्ष छत्तीसगढ़ के गांव-गांव एवं कस्बों नगरों- खरोरा, रायखेड़ा, बरतोरी, जर्वे, पथरी, गिर्रा, बलौदाबाजार, लवन, कोर्रा, धमतरी, चूलगहन, मरौद, कुरा, ढाबा, लोहरसी, तिल्दा, दल्लीराजहरा, चरोदा, सगनी, कोहका, भिलाई, कोरबा, रायगढ़, मुड़ागांव, राजगांव, पंगसुवां सलखिया, रायपुर, आदि में वैदिक धर्म का डंका ओ३म् ध्वज का परचम लहराया।

स्वामी जी ने केवल छत्तीसगढ़ अपितु पश्चिम उड़ीसा के ग्रामीण अंचलों में भी वैदिक धर्म का धुआंधार प्रचार किया तथा ऋषि के अमर संदेश, आर्यसमाज के सार्वभौमिक सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचाया। स्वामी जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् कुशल वक्ता एवं सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। रुढ़ियों एवं कुसंस्कारों को दूर करने के लिए आर्यजनों का आह्वान किया परिणाम स्वरुप गांव कस्बों, शहरों के हजारों आर्यजन उनके व्यक्तित्व और विद्वता से आकर्षित होकर आर्यसमाज के अनुयायी बनने लगे अनेकों आर्यसमाजों की स्थापना की, निःसन्देह स्वामी जी का पार्थिव शरीर आज हमारे बीच नहीं है तो भी उनके द्वारा प्रदत्त विचारधारा अन्तः सलिला-सरिता की भांति निरन्तर प्रवाहमान है जो यावत चन्द दिवाकरौ छत्तीसगढ़ी जनमानस को प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। स्वामी जी ने मित्रों, आलोचकों की परवाह किए बिना स्वामी दयानन्द के संदेश को, आर्यसमाज के संगठन को आर्यों को आगे बढ़ाया। वे निन्दा-स्तुति से कभी न डरते थे उनके सामने संभवतः भर्तृहरि का यह श्लोक रहा होगा -

निन्दन्तु नीति निपुणाः यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।

thearyasamaj.org

आरोग्य जगत

होमियोपैथी से मधुमेह रोग का उपचार

– डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)

होमियोपैथी में हम रोग का नहीं बल्कि रोगी के लक्षणों की चिकित्सा करते हैं, इसीलिए इस चिकित्सा पद्धति में हमें कई आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिलते है । यह बात बिल्कुल सही है कि शरीर में पहले लक्षणों का प्रकार परिलक्षित होता है, तत्पश्चात उससे संबंधित अवयव रोगग्रस्त होने लगते हैं, और फिर रोग ग्रस्त होने के साथ-साथ पार्श्व उद्भेद भी अपना घर जमाना शुरु कर देते हैं ।

होमियोपैथिक चिकित्सा सार्वभौम व सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा प्रणाली है । हम इसको सर्वश्रेष्ठ इसलिए कहते हैं क्योंकि यह शरीर की जीवनी शक्ति जो सदैव रोगों से शरीर की रक्षा के लिए सचेत रहती है और रोग के शरीर में प्रविष्ट होते ही उसका मुकाबला करती है बल प्रदान करती है । जब जीवनी शक्ति प्रबल रोग से लड़ते-लड़ते कमजोर पड़ने लग जाती है और रोग समूल नाश नहीं कर पाती तो सही होमियो औषधि मिलने से जीवनी शक्ति को ऐसा बल मिलता है जिससे रोगी को आश्चर्यजनक लाभ हो जाता है । होमियोपैथ रोग का नहीं बल्कि वास्तविक लक्षणों उसकी मानसिकता, शारीरिक बनावट आदि पर सूक्ष्मतापूर्वक विचार कर चुनी हुई औषधि देने से कोई भी जटिल से जटिल रोगों पर नियंत्रण एवं सफलता पाई जा सकती है । इसीलिए इस चिकित्सा पद्धति से कई ऐसे रोग जिन्हें आधुनिक चिकित्सा विज्ञान असाध्य कहकर छोड़ दिया करता है, वह बहुत ही आसानी से ठीक कर दिये जाते हैं ।

मधुमेह क्या है ?

मधुमेह एक बहुत ही आम और खतरनाक बीमारी है । भारत में हर पांच में से एक व्यक्ति को मधुमेह है । मधुमेह एक ऐसी बीमारी है जिसमें रोगी के खून में ग्लूकोज की मात्रा (ब्लडशुगर लेवल) आवश्यकता से अधिक हो जाती है । ऐसा दो कारणों से हो सकता है, या तो आपका शरीर पर्याप्त मात्रा में इन्सुलिन नहीं पैदा कर रहा है या फिर आपके सेल्स से पैदा हो रही इन्सुलिन पर प्रतिक्रिया नहीं कर रहे । इन्सुलिन एक हार्मोन है जो आपके शरीर में मेटाबोलिज्म को कन्ट्रोल करता है । मेटाबोलिज्म से अर्थ है उस प्रक्रिया से जिसमें शरीर खाने को पचाता है ताकि शरीर को उर्जा मिल सके और उसका विकास हो सके । हम जो खाना खाते हैं पेट में जाकर एनर्जी में बदलता है जिसे ग्लूकोज कहते हैं। इस एनर्जी/ग्लूकोज को हमारे शरीर में मौजूद लाखों सेल्स के अन्दर पहुंचना और ये काम तभी संभव है जब हमारे अग्नाशय पर्याप्त मात्रा में इन्सुलिन पैदा करे । बिना इन्सुलिन के ग्लूकोज सेल्स में प्रवेश नहीं कर सकता और तब हमारे सेल्स में ग्लूकोज को जलाकर शरीर में उर्जा पहुंचाते है । जब यह प्रक्रिया सामान्य रूप से नहीं हो पाती है, तो व्यक्ति मधुमेह रोग से ग्रस्त हो जाता है।

मधुमेह के प्रकार :–

१. टाईप वन :- यह तब होता है जब आपका शरीर इन्सुलिन बनाना बन्द कर देता है । ऐसे में मरीज को बाहर से इन्सुलिन देना पड़ता है ।

२. टाईप टू :- यह तब होता है जब आपके सेल्स से पैदा हो रही इन्सुलिन पर प्रतिक्रिया नहीं कर सकते ।

३. गैस्ट्रेशनल :- ऐसी महिलाओं को होता है जो गर्भवती है और उन्हें पहले कभी मधुमेह न हुआ हो । ऐसा प्रेगनेन्सी के दौरान खून में ग्लूकोज की मात्रा आवश्यकता से अधिक हो जाने के कारण होता है ।

४. मानसिक तनाव के कारण रोग होना ।

५. हारमोन्स की कमी के कारण ।

लक्षण :– लगातार पेशाब लगना, अत्यधिक प्यास लगना, आँखे कमजोर होना, अचानक वजन कम हो जाना, जोर से भूख लगना, घाव का जल्दी न भरना, त्वचा संबंधी रोग

thearyasamaj.org

होना तथा अनुवांशिक कारणों से होना।

मधुमेह होने पर इसके शुरुआती दिनों में रोगी को सारा दिल थकान महसूस होगी, हर रोज भरपूर नींद लेने के बाद सुबह उठते ही रोगी को ऐसा लगेगा कि रोगी की नींद पूरा नहीं हुई है और शरीर में हमेशा थकान महसूस होगी, इससे यह पता चलता है कि खून में मधुमेह (ब्लडशुगर) का लेवल लगातार बढ़ रहा है।

मधुमेह से संबंधित कुछ तथ्य :

मधुमेह से ग्रस्त लोगों की आयु पांच से दस साल कम हो जाती है। भारत वर्ष में इलाज न करा पाने के कारण हर वर्ष लगभग सत्ताईस हजार बच्चों की मृत्यु हो जाती है। अगर इस पर नियंत्रण न किया गया तो हार्टअटैक, अंधापन, आघात या किडनी फेल हो सकती है। यह एक अनुवांशिक बीमारी हो सकती है।

कारण :- मीठा अधिक खाना, शराब, बीयर, ठंड लगना व किसी भी तरह के मानसिक तनाव से होता है।

उपचार :- मधुमेह से पीड़ित रोगियों का होमियोपैथी चिकित्सा प्रणाली द्वारा इलाज कर सफलता पाई है। कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

प्रमुख औषधियाँ :- अर्सेनिक ब्रोमाइड, फास्फोरिक एसिड, सिजीजियम जम्बोलन, यूरेनियम नाइट्रिकम, अर्जेन्ट्रम नाईट्रकम, नेट्रम सल्फ, लैक्टिक एसिड, इन्सुलिन आदि होमियो औषधियाँ लक्षणों के आधार पर ली जा सकती है।

होमियोपैथी चिकित्सक की सलाह से औषधियाँ लेनी चाहिए-

भोजन तथा परहेज (अपथ्य) :- अधिक नमक, मीट-मछली, अण्डा, अल्कोहल, चाय-काफी शहद, नारियल, मीठा आदि।

पथ्य :- पानी खूब पीना चाहिए। अंगूर या अनार का रस, केला, अंजीर, ककड़ी, सलाद, प्याज आदि का सेवन करना चाहिए। गेहूँ, दलिया, छोले आदि।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, भारत माता स्कूल के सामने, टाटीबन्ध, रायपुर (छ.ग.)

ऋषिबोधपञ्चकम्

कृतो यैरूद्धारः श्रुति निगमवाचां मतिमतां
हृतज्चाविद्याया गहनतिमिरं यैर्दिशि दिशि।
प्रबुद्धानान्तेषामनवरतमेषाऽऽर्यजगते
दयानन्दर्षीणां भवतु शिवदा बोधरजनी॥1॥

न शूद्रो विप्रो वा भुवि जननतःकोऽपि भवति
वरेण्यो गर्ह्यो वा भवति सकलःकर्मफलतः।
इति ज्ञानस्यूतां द्युतिमखिललोकाय ददतां
दयानन्दर्षीणां भवतु शिवदा बोधरजनी॥2॥

विधेयः सम्मानो निखिलमहिलानामिह समै-
र्मतौ जाड्यं दार्ढ्यं त्वहह! जड़पूजा जनयति।
इति स्वच्छां शिक्षां जगति सकलायार्पितवतां
दयानन्दर्षीणां भवतु शिवदा बोधरजनी॥3॥

स्वतन्त्रं राष्ट्रं स्यात् क्वचिदपि पराधीनमिह नो
स्वधर्मः संरक्ष्यो हननपथि नेयाश्च कुधियः।
इति स्वप्नान् सत्यान् सततमतुलान् संविदधतां
दयानन्दर्षीणां भवतु शिवदा बोधरजनी॥

यदीयः संन्यासो ह्यभवदखिलानां शिवकरो
यदीयः सम्बोधो बुधजनविबोधाय समभूत्।
प्रभुप्रेमार्द्राणां प्रणयमहसां वेदविदुषां
दयानन्दर्षीणां भवतु शिवदा बोधरजनी॥

00--00

डॉ. मनोहर लाल आर्य, प्रणव कुटीर. जयंती विहार काँगड़ा 176001(हि0प्र)

"परीक्षा"

जो प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण, वेद विद्या, आत्मा की शुद्धि और सृष्टिक्रम से अनुकूल विचार के सत्यासत्य को ठीक-ठीक निश्चय करना है उसको 'परीक्षा' कहते हैं।

thearyasamaj.org

समाचार प्रवाह

गुरुकुल आश्रम सलखिया में आर्यवीर दल एवं चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर व वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सलखिया (रायगढ़)। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य विद्या सभा सलखिया, आर्यवीर दल छ.ग. व आर्यसमाज सलखिया के संयुक्त तत्वावधान में गुरुकुल आश्रम सलखिया में दिनांक २६ दिसंबर १४ से १ जनवरी १५ तक आर्यवीर दल एवं चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर एवं दिनांक २ से ४ जनवरी १५ तक भव्य वार्षिक महोत्सव महासमारोह के साथ गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

सात दिवसीय आर्य वीर दल एवं चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर में गुरुकुल के छात्रों के अलावा बाहर के १७५ छात्रों ने भाग लेकर शारीरिक, बौद्धिक एवं चारित्रिक प्रशिक्षण प्रशिक्षित व्यायाम शिक्षिकों द्वारा प्राप्त किया। समापन अवसर पर सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी ने गले से सरिया मोड़कर शक्ति प्रदर्शन किया तथा प्रशिक्षित आर्यवीरों ने योग के आकर्षक आसनों का प्रदर्शन किया, स्तूप निर्माण के साथ विविध करतब दिखाए।

गुरुकुल का वार्षिकोत्सव दिनांक २ से ४ जनवरी २०१५ तीन दिनों तक चलने वाले इस समारोह की शुरुआत प्रभु का मुख्य नाम ओ३म् अंकित ध्वज के आरोहण के साथ हुई। प्रतिदिन प्रातः एवं सायं चारों वेदों के चुने हुए मंत्रों से श्रद्धालु यजमान दम्पत्तियों ने सुखशान्ति की कामना करते हुए आहुतियां प्रदान की। दिल्ली से पधारे पं. दिनेश दत्त एवं पं. टीकमसिंह द्वारा प्रेरक प्रभुभक्ति भजनों की आकर्षक प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर आमंत्रित अंतर्राष्ट्रीय विद्वान् आचार्य बृजेश जी वैदिक साधना आश्रम गोवर्धनपुर अलीगढ़ उ.प्र. के सारगर्भित वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान हुए। छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी ने उपस्थित आर्य जनता को अपने अमृत वचनों से तृप्त किया। मातृमंदिर कन्या गुरुकुल वाराणसी से पधारी डॉ. गायत्री जीने अपनी वक्तृता में महर्षि दयानन्द के योगदानों की चर्चा करते हुए बताया कि स्वामी दयानन्द को ही इस बात का श्रेय जाता है कि आज न केवल अपने देश में अपितु विदेशों में नारी शक्ति का वर्चस्व निरन्तर बढ़ रहा है। कांसा छ.ग.से पधारे आचार्य रणवीर जी ने वैदिक सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला। अजमेर राजस्थान से आए आचार्य बलदेव जी ने सामयिक उद्‌बोधन प्रदान किए।

इस कार्यक्रम में अतिविशिष्ट राजनयिक व जनप्रतिनिधि जिनका स्नेह सहयोग पूर्ण सान्निध्य मिला उनमें हैं :- मान. श्री दीनदयाल गुप्ता (भवानी टेक्सटाइल कोलकाता), मान. श्री शिवकुमार चौधरी (इंदौर म.प्र.), मान. श्री शत्रुघ्न आर्य (रांची), मान. श्री नटवरलाल रतेरिया उद्योगपति रायगढ़, मान. श्री विश्वबंधु महेन्द्रा जी फरीदाबाद, मान. श्री रामदास अग्रवाल जी उद्योगपति रायगढ़, मान. श्री रविन्द्र आर्य उद्योगपति बिंदल हाऊस सूरत, राजनयिक प्रतिनिधियों में मान. श्री विष्णुदेव साय राज्यमंत्री भारत सरकार, मान. श्री नंदकुमार साय राज्यसभा सदस्य, मान. श्रीमती सुनिती राठिया जी विधायक लैलूंगा, मान. श्री सत्यानन्द जी राठिया, पूर्व मंत्री छ.ग. शासन, मान. श्री शिवशंकर साय जी विधायक पत्थलगांव, मान. श्री ओमप्रकाश राठिया जी पूर्व संसदीय सचिव छ.ग., मान. श्री हृदयराम जी राठिया पूर्व विधायक लैलूंगा, मान. श्री गणेश कौशिक जी अध्यक्ष संस्कृत विद्या मण्डलम् रायपुर।

इस अवसर पर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी के रुप में मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा एवं छ.ग. सभा से संबद्ध विभिन्न आर्यसमाजों रायपुर, धमतरी, बिलासपुर, रायगढ़, अम्बिकापुर, कांसाबेल, पत्थलगांव, लैलूंगा व घरघोड़ा सहित अन्य आर्यसमाजो के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने उपस्थित होकर आर्यवीरों का उत्साहवर्धन किया एवं भव्य वार्षिकोत्सव महोत्सव में उपस्थित होकर कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया। इस कार्यक्रम में यज्ञ व्यवस्था में सहयोग आचार्य वनमाली जी एवं श्री धनसहिं आर्य ने की। कार्यक्रम का संचालन श्री अतुल वर्मा, श्री जनकराम भोय एवं कान्हुराम गुप्ता जी व्यवस्था प्रभारी के रुप में श्री जागेश्वर आर्य, श्री डिग्रीलाल आर्य, श्री रुपकिशोर आर्य, श्री वृहस्पति भोय ने विशेष सहयोग किया।

thearyasamaj.org

ज्ञान गंगा महोत्सव सम्पन्न

बिलासपुर। बसंत पंचमी का पावन अवसर पर २४ से २६ जनवरी २०१५ तक आर्यसमाज गोंड़पारा बिलासपुर के तत्वावधान में दयानन्द सेवाधाम अशोक नगर बिलासपुर में ज्ञान गंगा महोत्सव का समापन २६ जनवरी २०१५ को **आज की शाम शहीदों के नाम** कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ।

महोत्सव का शुभारम्भ २४ जनवरी को विशाल शोभा यात्रा, योगासन, व्यायाम एवं शौर्य प्रदर्शन के साथ हुआ। सुबह ११ बजे महर्षि दयानन्द चौक का लोकार्पण मान. श्री किशोर राय महापौर बिलासपुर के द्वारा किया गया। शोभा यात्रा दयानन्द मार्ग होते हुए बिजली आफिस के पास स्थित दयानंद सेवाधाम अशोक नगर पहुंची। यहां पर वैदिक महायज्ञ के साथ बसंत पंचमी का पर्व मनाया गया। इस अवसर पर नगर के प्रतिष्ठित समाजसेवी श्री गोपाल राम छपारिया जी के विशेष सहयोग से उनकी माता जी स्व. चमेलीदेवी छपारिया के पुण्य स्मृति में **जन कल्याणार्थ चमेली देवी छपारिया कल्याणी होम्योपैथिक चिकित्सालय एवं वैदिक साहित्य केन्द्र** का उद्‍घाटन मान. श्री किशोर राय महापौर बिलासपुर के द्वारा किया गया।

बसंत पंचमी के शुभअवसर पर २४ जनवरी को दोप. २.०० बजे से **सामूहिक विवाह संस्कार** का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें दहेज मुक्त आदर्श विवाह संस्कार सम्पन्न कराये गये। सायंकालीन भजन सत्संग का कार्यक्रम शाम ४ से ७ बजे तक हुआ।

रविवार २५ जनवरी को प्रातः ८ से ११ बजे तक वैदिक महायज्ञ भजन एवं प्रवचन तथा संध्या ४ से ७ बजे तक भजन एवं वेद प्रवचन हुआ। उपस्थित अनेक लोगों ने अपने मन में उठने वाले प्रश्नों शंकाओं एवं समस्याओं का वैदिक विद्वानों द्वारा उचित समाधान प्राप्त किया।

सोमवार २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में प्रातः ९ से १२ बजे तक विशेष यज्ञ एवं भजन प्रवचन के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। सायं ४ से ७ बजे तक **राष्ट्र के समक्ष समस्याएं एवं उनका समाधान** विषय पर व्याख्यान एवं देशभक्ति गीतों तथा भजनों का कार्यकम **आज की शाम शहीदों के नाम** का आयोजन हुआ। तत्पश्चात् काव्य गोष्ठी में महात्मा चैतन्यमुनि पं. कुलदीप, श्री रुपचंद जीवनानी, श्री वेदप्रकाश अग्रवाल, श्रीमती कमला शर्मा, श्री नन्दकुमार आर्य, श्री पुष्कर जायसवाल ने जोशीले राष्ट्रभक्तिपूर्ण गीत प्रस्तुत किये। देशभक्तों के बलिदान से प्रेरित होकर श्री रुपचंद जीवनानी, श्री सुभाष बत्रा, श्री सुधीर गुप्ता, श्री लक्ष्मी प्रसाद गुप्ता, श्रीमती सुलोचना चावला, श्रीमती शैल गुप्ता, श्रीमती निर्मला गुप्ता, श्री मारुति प्रसाद गुप्ता ने नेत्र सहित सर्वांग दान की घोषणा की। श्री रुपचंद जीवनानी ने दयानन्द सेवाधाम के कार्यों से प्रभावित होकर ५०,०००/- रु. एवं श्री गोपाल राम जी छपारिया ने ५१,०००/- रुपये का सात्विक दान दिया।

ज्ञान गंगा महोत्सव को सफल बनाने हेतु वेदों के प्रकांड विद्वान् एवं दार्शनिक महात्मा चैतन्य मुनि जी (हि.प्र.) वैदिक भजनोपदेशक एवं कथाकार आचार्य कुलदीप जी ने अपनी मंडली सहित बिजनौर उ.प्र. से पधारे थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन आर्यसमाज के पुरोहित श्री जयदेव शास्त्री एवं आभार प्रदर्शन श्री सुदर्शन जायसवाल द्वारा किया गया। धर्मप्रेमी जनों ने इस समारोह में बड़ी संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

संवाददाता : सुदर्शन जायसवाल, मंत्री आ.स. गोंड़पारा बिलासपुर

आर्यसमाज कांसा, कोटमी एवं बघौद के संयुक्त तत्वावधान में मकर संक्रान्ति पर्व सोल्लास सम्पन्न

घोटाई। १५ जनवरी २०१५ को घोटाई जलाशय में आर्यसमाज कांसा, आर्यसमाज कोटमी एवं आर्यसमाज बघौद के संयुक्त तत्वावधान में वैदिक रीति के अनुसार मकर संक्रान्ति पर्व मनाया गया। स्नान, दान एवं हवन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर ग्राम वासियों को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य एवं आचार्य वासुदेव व्रती जी के सत्सं का लाभ मिला। सभा प्रधान द्वारा शास्त्रों में स्थापित पंच महाव्रत, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह के पालन का संदेश ग्रामीणजनों को प्रदान किया गया। आचार्य अंशुदेव जी ने लोगों के उत्साह की भूरि-भूरि प्रशंसा की और वेदों के सिद्धान्तों को अपने जीवन में उतारने की सीख प्रदान की। आर्यसमाज कांसा की ओर से लगभग ६०० लोगों के भोजन की उत्तम व्यवस्था की गई थी। भोजन पश्चात् आर्यसमाज बघौद से श्री रामकुमार साहू जी के द्वारा महिलाओं एवं बच्चों के लिए परम्परागत क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभा प्रधान जी के हाथों पुरस्कार वितरण एवं वैदिक कैलेण्डर सभी लोगों को प्रदान किया गया। अंत में वैदिक शिक्षा के प्रचार में पूर्णतः समर्पित आचार्य रणवीर जी जिन्होंने कार्यक्रम का आयोजन एवं संचालन आभार प्रकट किया।

संवाददाता : उमाशंकर पटेल, मंत्री आर्यसमाज कोटमी

thearyasamaj.org

युवा वैदिक विद्वान्, आर्यजगत् के विख्यात कर्मठ आर्यनेता, प्रेरक

ब्र. राजसिंह जी को भावभीनी श्रद्धांजलि

देश विदेश से शोक-संवेदनाएँ सम्पूर्ण आर्यजगत् में शोक की लहर

नेत्रदान का संकल्प पूर्णकर दो आँखों को दी नई दुनियां

दिल्ली ५ जनवरी २०१५ की सुबह आर्यसमाज के एक देदिप्यमान नक्षत्र सारा जीवन आर्यसमाज के प्रति समर्पित करने वाले आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान्, प्रवक्ता, कर्मठ आर्यनेता को हमसे छीनकर ले गई। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की वर्तमान श्रृंखला के जनक एवं संयोजक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अहम पदाधिकारी, सार्वदेशिक आर्यवीर दल के अनथक कार्यकर्ता, आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी के उपप्रधान एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के १२ वर्षों तक प्रधान पद की जिम्मेदारी संभालने वाले युवा वैदिक विद्वान् आर्यजगत् के विख्यात कर्मठ आर्यनेता, प्रेरक ब्र. राजसिंह आर्य जी का ५ जनवरी २०१५ को हृदयगति रुक जाने के कारण राममनोहर लोहिया अस्पताल में दोपहर लगभग १२.३० बजे निधन हो गया। वे ६१ वर्ष के थे।

इनके निधन के समाचार सुनते ही जैसे समस्त आर्य जगत् पर वज्रपात हो गया हो। जिसने सुना सन्न रह गया। सहसा विश्वास करने वाली आखिर घटना ही नहीं थी। तो विश्वास आखिर करें भी तो कैसे ? जिसको एस.एम.एस. मिलता आगे लौटकर फोन करता। क्या अपने ब्र. राजसिंह आर्य ? जवाब आखिर होता भी क्या ? आखिर ईश्वर की इच्छा के आगे किसकी चला करती है। हम सबको नत-मस्तक होना पड़ता है। और इस खबर को सुनने के बाद लाख न चाहने के बावजूद भी मानना ही पड़ा। ऐसा घटनाक्रम जिसके विषय में सहसा विश्वास करना इस खबर के लिखे जाने तक भी मुश्किल प्रतीत हो रहा है। परन्तु ईश्वर के आगे नत-मस्तक होते हुए हम इस सूचना को लिख पाने की शक्ति जुटा पा रहे हैं।

अस्पताल से उनके पार्थिव शरीर को उनके पारिवारिक निवास गुप्ता कालोनी, विजय नगर दिल्ली ले जाया गया। जहां आर्यजनों का तांता लगा रहा। अगले दिन उनका पार्थिव शरीर आर्यजनों के अंतिम दर्शनों हेतु ६ जनवरी को प्रातः ८ बजे से ११.३० बजे तक आर्यसमाज १५ हनुमान रोड नई दिल्ली में रखा गया। इस अवसर पर दिल्ली सहित समस्त भारत के विभिन्न प्रान्तों से पधारे आर्य नेताओं ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। साथ ही अनेक गुरुकुलों, विद्यालयों एवं आर्यवीर दल के गणवेशधारी अधिकारियों ने उन्हें बिगुल की धुन द्वारा श्रद्धांजलि दी।

तत्पश्चात् दोप. १२ बजे उनकी अंतिम यात्रा निगम बोध घाट के लिए आर्यसमाज हनुमान रोड से रवाना हुई। अंतिम यात्रा में उनका पार्थिव शरीर पुष्पों से सज्जित वाहन पर रखा गया, जिस पर लगातार गायत्री मन्त्र और ब्र. राजसिंह आर्य अमर रहे के नारे गुंजायमान होते रहे। वाहन के आगे-पीछे सैकड़ों गाड़ियों का काफिला अपने प्रिय नेता को दुःखी हृदय से आसुंओं के बोझ लिए, बोझिल रफ्तार से उन्हें अंतिम

thearyasamaj.org

संस्कार के लिए दिल्ली की सड़कों पर आगे बढ़ता रहा। सब वाहनों पर ओ३म् के ध्वज लहरा-लहराकर मानो ये कहने का प्रयास कर रहे हों कि अपने प्रिय नेता के कार्यों को कभी मन्द न होने देंगे।

निगम बोध घाट दिल्ली पहुंचने पर काफिले में शामिल लोगों से अधिक संख्या में अश्रुपूरित नेत्र वहां अपने नेता को श्रद्धांजलि देने एवं अंतिम दर्शनों के लिए खड़े थे। जयकारों के ऊंचे बोलों के बीच मुख से निकलने वाली सिसकियां दब नहीं रही थी। इन्हीं सब के बीच विशुद्ध वैदिक रीति से आर्यसमाज के वरिष्ठ वैदिक विद्वानों ने मन्त्रोच्चार के मध्य उनका अंतिम संस्कार आरम्भ किया। इससे पूर्व हजारों आर्यजनों ने उस स्थान पर भी अपनी पुष्पांजलि अर्पित की। उनके पार्थिव शरीर को उनके छोटे भाई श्री विजय आर्य ने मुखाग्नि प्रदान की।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारियों सदस्यों, अग्निदूत परिवार एवं छत्तीसगढ़ के समस्त आर्यसमाजों की ओर से अपने आर्यनेता को अश्रुपूरित श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए प्रभु से प्रार्थना है शोक संतप्त परिजनों को असह्यवेदना को सहने की शक्ति प्रदान करे तथा जीव को कर्मानुसार सद्गति की प्राप्ति हो।

विनम्र श्रद्धांजलि

बिलासपुर। आर्यजगत के मशहूर कवि एवं साहित्यकार, आर्यसमाज बिलासपुर के पूर्व मंत्री समाजसेवी श्री हरिकुमार साहू जी का आकस्मिक निधन दि. १० जनवरी २०१५ को हृदयगति रुक जाने से हो गया है। आपका अंतिम संस्कार वैदिक रीति से सरकंडा बिलासपुर स्थित मुक्तिधाम में आर्यजनों एवं नगर के गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में किया गया। रविवार १२ जनवरी २०१५ को आर्यसमाज में शोक सभा आयोजिक कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। आपने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करते हुए अनेकों रचानायें की है, पावन आर्य समाज, ओम चालीसा, गायत्री चालीसा प्रमुख है।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारियों सदस्यों, अग्निदूत परिवार एवं छत्तीसगढ़ के समस्त आर्यसमाजों की ओर से अपने आर्यनेता को अश्रुपूरित श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए प्रभु से प्रार्थना है शोक संतप्त परिजनों को असह्यवेदना को सहने की शक्ति प्रदान करे तथा जीव को कर्मानुसार सद्गति की प्राप्ति हो।

संवाददाता : सुदर्शन जायसवाल, मंत्री आर्यसमाज बिलासपुर

शांतिधर्मी के सम्पादक पं. चन्द्रभानु आर्य को भावभीनी श्रद्धांजलि

जीन्द। आर्यसमाज के दिग्गज भजनोपदेशक और साहित्यकार, शांतिधर्मी के प्रकाशक और प्रधान सम्पादक पं. चन्द्रभानु आर्य का गत २३ दिसंबर २०१४ को रात्रि ११.३५ को देहावसान हो गया। वे ८५ वर्ष वर्ष के थे। २४ दिसम्बर २०१४ को अंत्येष्टि संस्कार पं. ईश्वरचन्द्र शास्त्री ने पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया। जिसमें नगर व आसपास के हजारों लोगों ने उन्हें अंतिम बिदाई दी। उनके सम्मान में स्वर्णकार बाजार बन्द रहा।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, अग्निदूत परिवार की ओर से अश्रुपूरित श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए प्रभु से प्रार्थना है शोक संतप्त परिजनों को असह्यवेदना को सहने की शक्ति प्रदान करे तथा जीव को कर्मानुसार सद्गति की प्राप्ति हो।

संवाददाता : सहदेव शास्त्री, कार्य.सम्पादक, शांतिधर्मी

मुक्ति के साधन

अर्थात् जो पूर्वोक्त ईश्वर की कृपा, स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना तथा धर्म का आचरण और पुण्य का करना, सत्संग, विश्वास, तीर्थसेवन, सत्पुरुषों का संग, परोपकार करना आदि सब अच्छे कामों का करना और सब दुष्ट कर्मों से अलग रहना है, वे सब मुक्ति के साधन कहाते हैं।

thearyasamaj.org

सभा कार्यालय में गणतंत्र दिवस सम्पन्न

दुर्ग। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, विद्युत सुरक्षा विभाग, आर्यसमाज आर्यनगर दुर्ग के संयुक्त तत्वावधान में दयानन्द परिसर प्रांगण में गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम सभा कार्यालय के वरिष्ठ प्रबंधक श्री आर.पी. यादव के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा कार्यालय के समस्त कर्मचारी, विद्युत सुरक्षा विभाग के समस्त कर्मचारी मुख्य रुप से उपस्थित रहे।

- निजी संवाददाता

शांतिवन आश्रम (टांगरपाली) में युवा चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

टांगरपाली (उड़ीशा)। पश्चिम ओड़िशा में आर्ष पाठविधि का निःशुल्क शिक्षण केन्द्र महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना द्वारा संचालित शांतिवन आश्रम टांगरपाली में युवा चरित्र निर्माण एवं आर्यवीर दल शिविर उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। यह शिविर २५ से ३० दिसंबर २०१४ तक योग्य शिक्षकों द्वारा चरित्र निर्माण एवं आत्म रक्षा के गुर सिखाये।

समापन समारोह पर गुरुकुल आमसेना के आचार्य स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, अशोक भेहेर, श्री विभूति साहू, श्री कृपा साहू, श्री तपोधन प्रधान तथा अन्य अतिथिगणों की उपस्थिति थी। कार्यक्रमोपरान्त स्वामी व्रतानन्द के द्वारा गरीबों को कम्बल वितरण किया गया। अन्त में शांतिवन आश्रम के आचार्य स्वामी नारदानन्द जी द्वारा आर्यवीरों तथा अतिथि महानुभावों को शुभकामना देते शांतिपाठ पूर्वक इस शिविर का समापन हुआ।

संवाददाता : डॉ. कुञ्जदेव मनीषी

घोषणा - पत्र

(फार्म - 4 नियम - 8)

- प्रकाशन का स्थान - दुर्ग (छ.ग.)
- प्रकाशन की अवधि - मासिक
- भाषा - हिन्दी
- मुद्रक का नाम - आचार्यअंशदेव आर्य, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा दुर्ग (छ.ग.)

  क्या भारत का नागरिक है - हाँ
- प्रकाशक का नाम - आचार्य अंशुदेव आर्य, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

  क्या भारत का नागरिक है - हाँ
- सम्पादक का नाम - आचार्य कर्मवीर

  क्या भारत का नागरिक है - हाँ

  पता - छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)
- उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार है। - छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

मैं आचार्य अंशुदेव आर्य, प्रधान, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

हस्ताक्षर

आचार्य अंशुदेव आर्य

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना में आर्यवीरांगना प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आमसेना। बालकों की तरह विद्यालयों में पढ़ने वाली कन्याओं को भी वैदिक धर्म के सिद्धान्तों से परिचित कराने तथा उन्हें आत्मरक्षा की शिक्षा देकर साहस एवं निर्भीक बनाने के लिए आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना में आर्य वीरांगना शिविर के सफल आयोजन में 150 से अधिक कन्याओं ने गुरुकुल के संचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के मार्गदर्शन में वैदिक धर्म की सिद्धान्तों के ज्ञान प्राप्त करने के साथ आत्मरक्षा के उपायों का ज्ञान भी प्राप्त किया। इन कन्याओं को प्रशिक्षण देने के लिए वरिष्ठ प्रशिक्षक श्री हरिसिंह आर्य दिल्ली से पधारे थे। कन्याओं को प्रेरणा देने के लिए स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, आचार्य कुञ्जदेव मनीषी, पूर्व विधायक श्री राजूभाई धोलकिया, आचार्या पुष्पाञ्जली शास्त्री का उपदेश निरन्तर होता रहा। इस प्रशिक्षण के सारी आर्थिक व्यवस्था गुरुकुल आश्रम की ओर से की गयी। इस शिविर का उद्घाटन स्थानीय विधायक श्री बसंत भाई पण्डा ने किया। *संवाददाताः मनुदेव वाम्मी*

thearyasamaj.org

आर्य पर्वों की सूची

विक्रमी संवत् २०७१-२०७२ तदनुसार सन् २०१५ ई.

क्र.सं.	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	सम्वत्	अंग्रेजी तिथि	दिवस
१.	मकर संक्राति	माघ बदी -९	२०७१	१४-०१-२०१५	बुधवार
२.	बसन्त पंचमी	माघ सुदी -५	२०७१	२४-०१-२०१५	शनिवार
३.	गणतंत्र दिवस	माघ सुदी -७	२०७१	२६-०१-२०१५	सोमबार
४.	सीताष्टमी	फाल्गुन बदी -८	२०७१	१२-०२-२०१५	गुरुवार
५.	महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	फाल्गुन बदी-१०	२०७१	१४-०२-२०१५	शनिवार
६.	ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि)	फाल्गुन बदी -१४	२०७१	१७-०२-२०१५	मंगलवार
७.	लेखराम तृतीया	फाल्गुन सुदी-३	२०७१	२१-०२-२०१५	शनिवार
८.	होली (नवसंस्येष्टि) मिलन पर्व	फाल्गुन सुदी-१५	२०७१	०५-०३-२०१५	गुरुवार
		चैत्र बदी - १		०६-०३-२०१५	शुक्रवार
९.	नवसम्वतसराम्भः (आर्यसमाज स्थापना दिवस)	चैत्र सुदी - १	२०७२	२१-०३-२०१५	शनिवार
१०.	रामनवमी	चैत्र सुदी- ८	२०७२	२८-०३-२०१५	शनिवार
११.	बैशाखी	बैसाख बदी -९	२०७२	१३-०४-२०१५	सोमवार
१२.	हरि तृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण सुदी- ३	२०७२	०३-०८-२०१५	सोमवार
१३.	स्वतंत्रता दिवस	श्रावण शुक्ल-१	२०७२	१५-०८-२०१५	शनिवार
१४.	रक्षा बंधन (श्रावणी उपाकर्म) } वेद प्रचार सप्ताह	श्रावण शुक्ल-१५	२०७२	२९-०८-२०१५	शनिवार
१५.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद बदी-७	२०७२	०५-०९-२०१५	शनिवार
१६.	दशहरा (विजयादशमी)	आश्विन सुदी-९	२०७२	२२-१०-२०१५	गुरुवार
१७.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द जन्मदिवस	आश्विन सुदी-११	२०७२	२४-१०-२०१५	शनिवार
१८.	दीपावली (महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस)	कार्तिक बदी-१५	२०७२	११-११-२०१५	बुधवार
१९.	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	मार्ग सुदी -१३	२०७२	२३-१२-२०१५	बुधवार

विशेष टिप्पणी : १. आर्य समाजें इन पर्वों को उत्साहवर्धक मनाएँ। २. देशी तिथियों में घट बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं।**

अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं।

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

thearyasamaj.org

वैदिक गुरुकुल आश्रम सलखिया (रायगढ़) में सम्पन्न आर्यवीर दल एवं चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर एवं वार्षिकोत्सव की झलकियाँ

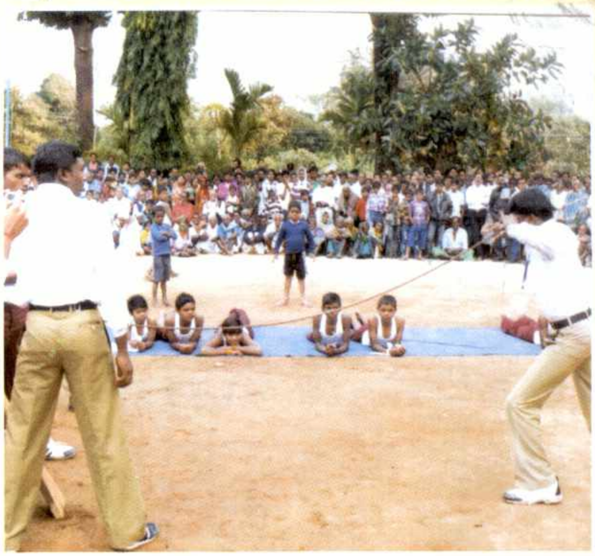

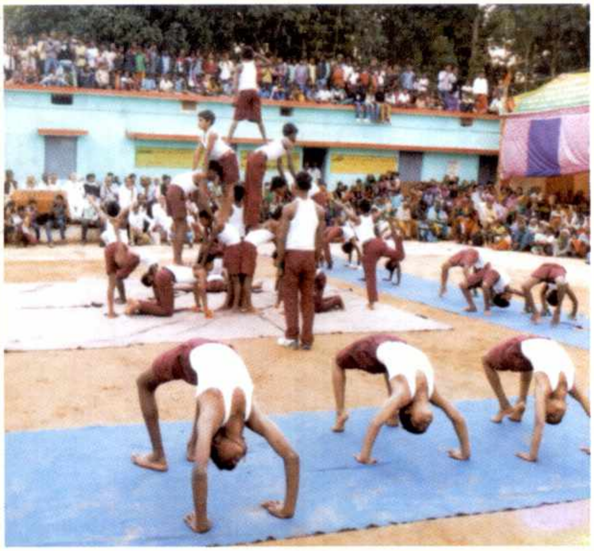

thearyasamaj.org

फरवरी 2015
डाक पंजी. छ.ग./ दुर्ग संभाग / 99 / 2015-17
CHH-HIN/2006/17407

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,

श्रीमान्

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग −491001 (छ.ग.)

वैदिक गुरुकुल आश्रम सलखिया (रायगढ़) में सम्पन्न आर्यवीर दल एवं चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर एवं वार्षिकोत्सव की झलकियाँ

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.